॥ ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः॥

स्पिरिचुअल साइंस
Spiritual Science

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

वर्ष : 12 अंक : 138 जोधपुर : हिन्दी, अंग्रेजी व गुजराती मासिक पत्रिका नवम्बर– 2019 30/–प्रति

सतयुग का प्रथम दिन – 24 नवम्बर 2019

FILE PHOTO

'अगम लोक' की सर्वोच्च शक्ति

''पैगम्बर संदेश लेकर आता है, वह केवल संत पुरुषों को प्रभावित करता है तथा उनकी आस्था ईश्वर के प्रति दृढ़ करता है, जिससे कुछ काल के लिए शांति स्थापित होती है। परन्तु राक्षस वृत्ति के लोग, पैगम्बर की बात को नहीं मानते हैं। यीशु और मूसा के साथ यही हुआ। परन्तु 'अवतार' का होना युग परिवर्तन का संकेत है। सतयुग, त्रेता व द्वापर इसके प्रमाण हैं। कलियुग की समाप्ति भी उस परमसत्ता के पृथ्वी पर अवतरण के बाद होगी। ''सत्लोक'' और ''अलख लोक'' की शक्तियाँ, त्रेता और द्वापर में अवतरित हो चुकी हैं। कलियुग की समाप्ति के लिए अब ''अगम लोक'' की सर्वोच्च शक्ति को अवतार लेना होगा।''

-समर्थ सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग

सद्गुरुदेव सियाग का अवतरण दिवस

जोधपुर आश्रम में 24 नवम्बर 2019 को सुबह 10.30 बजे मनाया जाएगा।

क्या एक निर्जीव चित्र सजीव पर प्रभाव डाल सकता है ?
प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या ?

सद्गुरुदेव सियाग की दिव्य वाणी में संजीवनी मंत्र सुनकर इनके चित्र पर ध्यान करके देखें। (अपने घर बैठे ही)

मंत्र दीक्षा के लिये डायल करें - 07533006009

त्रिगुणातीत जाति

मैं उक्त तीनों जातियों में ही विश्वास करता हूँ। चौथी जाति गुरु की होती है। इन जातियों के सिवाय अन्य जाति विश्व में हो ही नहीं सकती। अतः मैं मानव कृत जाति, धर्म और राष्ट्र की सीमाओं का उल्लंघन करते हुए मेरे असंख्य गुरुओं की कमाई का गुरु प्रसाद, जो कि मेरे परमदयालु गुरुदेव की अहैतुकी कृपा के कारण अनायास ही मुझे प्राप्त हो गया है, विश्व में बाँटने निकला हूँ। मैं वैदिक दर्शन के 'सर्व खल्विदं ब्रह्म' के सनातन सिद्धांत में विश्वास करता हूँ। मेरे गुरुदेव का स्पष्ट आदेश है कि माँगने आया कोई भी व्यक्ति खाली हाथ नहीं लौटना चाहिए।

–समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

"ॐ श्री गंगाई नाथाय नमः"

स्पिरिचुअल साइंस
Spiritual ॐ Science

गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी (ब्रह्मलीन)

वर्ष : 12 अंक : 138 जोधपुर:- हिन्दी, अंग्रेजी व गुजराती मासिक पत्रिका नवम्बर – 2019

वार्षिक 300/– ❋ द्विवार्षिक : 600/– ❋ आजीवन (11 वर्ष) : 3000/– ❋ मूल्य 30/–

❖ संस्थापक एवं संरक्षक :
पूज्य सद्गुरुदेव
श्री रामलालजी सियाग

❖ सम्पादक :
रामूराम चौधरी

कार्यालय :
Spiritual Science
पत्रिका
अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र
पो.बॉक्स नं.41,
होटल लेरिया के पास,
चौपासनी, जोधपुर (राज.) भारत
9784742595
E-mail :
spiritualscienceavsk@gmail.com

Ashram :
Adhyatma Vigyan Satsang Kendra
Near Hotel Leriya,
Chopasani, JODHPUR (Raj.)
INDIA - 342 003
☎ +91 0291-2753699
Mob. : +91 9784742595
e-mail :
avsk@the-comforter.org
Website :
www.the-comforter.org

अ नु क्र म

मंत्र एक ही गुरु का चलेगा.....4
युग परिवर्तन अनिवार्य है (सम्पादकीय).....5
सद्गुरुदेव की दिव्य वाणी.....6
भारत के दो महामंत्र.....7–8
नव सृजन के लिए.....9
गुरुदेव सियाग सिद्धयोग (अनुभूतियाँ).....10–18
चित्र पृष्ठ.....19–23
भगवान् की अवतरण–प्रणाली.....24–25
सद्गुरुदेव का प्रवचन.....26
पूरे विश्व में सनातन ज्योति.....27–29
सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से.....30
सद्गुरुदेव की प्रसन्नता.....31
योग के आधार.....32
योगियों की आत्मकथा.....33
योग के बारे में.....34
Beginning of my Spiritual Life.....35
सिद्धयोग.....36
शेष पृष्ठ सम्पादकीय.....37
ध्यान विधि.....38

www.the-comforter.org

"मंत्र एक ही गुरु का चलेगा"

"अगर मुझमें गुँजाईश है तो काम अभी शुरू हो जायेगा, 20 साल नहीं लगेंगे।"
-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

Web:-www.the-comforter.org

Holi Festiwal
Surat (Gujarat) 10-03-2009

"जिसे आप **राधा, सीता, पार्वती या अम्बा के नाम से पूजते हो, हमारे योगियों ने उसे कुण्डलिनी कह दिया**। वो Sacrum (कमर के पीछे की तिकोनी हड्डी या रीढ़ की हड्डी का अंतिम सिरा) में साढे तीन आंटे (फेरे) लगा कर, अपने दुम (पूँछ) को मुँह में दबाये हुए Dormant position (**सुषुप्त-अवस्था**) में रहती है। सुषुप्ति में रहती है। अगर Proper (समर्थ,सही) गुरु है तो ही जागती है।

हठयोग से अगर उसे छेड़छाड़ करोगे तो आपको पागल भी कर सकती है, मृत्यु भी हो सकती है। इस प्रकार आपको केवल नाम जप और ध्यान करना है और मुझे यहाँ (आज्ञाचक्र की ओर इशारा) देखना है। **मंत्र एक ही गुरु का चलेगा**। आपके professional (व्यावसायिक) गुरु है तो वो उसके साथ नहीं चलेगा और **ध्यान मेरा (सद्गुरुदेव सियाग) करना पड़ेगा**, उसके बाद आपकी छुट्टी। अगर मुझमें गुँजाईश है तो काम अभी शुरू हो जायेगा, 20 साल नहीं लगेंगे। मैं आपको कुछ नहीं दूँगा, एक बात ध्यान से सुन लो।"

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग
संदर्भ-जोधपुर आश्रम-शक्तिपात दीक्षा कार्यक्रम-30 जुलाई 2009

सिद्धयोग का वायरस

"इस विज्ञान के युग में मानव जाति में होने वाले इस क्रांतिकारी परिवर्तन से विज्ञान के लोग भौंचक्के हैं। उन्हें कुछ भी समझ में नहीं आ रहा है। इस अर्थ-प्रधान युग में विश्व के धनी राष्ट्र इससे अत्यधिक भयभीत है। मनुष्य शरीर में "**सिद्धयोग**" द्वारा ऐसा वायरस पैदा हो गया है, जिसका मुकाबला विश्व की कोई शक्ति नहीं कर सकेगी। पूर्ण सत्य अभी भविष्य के गर्भ में छिपा है।"-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग (25.8.2003)

युग परिवर्तन अनिवार्य है

24 नवम्बर 2019 को समर्थ सद्‌गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग का 94 वाँ अवतरण दिवस जोधपुर आश्रम में श्रद्धा भाव से मनाया जाएगा। समर्थ सद्‌गुरुदेव ने 1968 से मानव के दिव्य रूपान्तरण का कार्य प्रारम्भ किया और 24 नवम्बर 2019 को भागवत शक्ति द्वारा शुरू किये गये इस कार्य के 50 वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। इसी दिन से सतयुग का प्रारम्भ हो रहा है। इस पावन अमृतमयी वेला की समस्त मानव जाति को हार्दिक शुभकामनाएँ। सतयुग का आभास उन्हें ही अनुभूत होगा, जो भागवत चेतना के बताए पथ पर चलेंगे।

'युग परिवर्तन अनिवार्य है', शीर्षक पर गुरुदेव की दिव्य लेखनी से लिखा गया ये लेख-

''कालचक्र अबाध गति से निरन्तर चलता ही रहता है। संसार की हर वस्तु परिवर्तनशील है। **शक्ति संतुलन ही शान्ति का द्योतक है।** असंतुलन ही अशान्ति और दुःखों का कारण है। मानव जाति में आज जो अशान्ति नजर आ रही है, वह असंतुलन का ही कारण है। आज तो स्थिति यह है कि तामसिकता का पलड़ा बहुत भारी है।

संसार भर की राज सत्ता पर, वह शक्ति निरंकुश होकर एक छत्र शासन कर रही है। हम देख रहे हैं कि हमारे देश के सत्ताधारी वर्ग इसी प्रकार के तांत्रिकों का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए भटकते रहते हैं। इस प्रकार तामसिकता के प्रभाव में उन्हें जो करना चाहिए, वही वे बेचारे करने के लिए विवश हैं।

संसार में जब तक यह वर्ग सात्विक सत्ता के दिशा निर्देश से काम नहीं करने लगेंगे, तब तक शांति पूर्ण रूप से असम्भव है। **तामसिक शक्तियाँ, चोर शक्तियाँ हैं। वे हमेशा नकली संत का भेष बनाकर धोखा देती है।** *सारी गड़बड ईश्वर की आड़ लेकर चल रही है।* एक साधारण व्यक्ति भी कर्ण पिशाचनी की सिद्धि करके संसार को मूर्ख बनाकर एक सिद्ध पुरुष के रूप में ख्याति प्राप्त करके पूजा जा रहा है। तामसिकता का एक छत्र साम्राज्य होने के कारण लोगों की बुद्धि ऐसी भ्रमित कर रखी है कि वे भले बुरे की पहचान ही नहीं कर सकते **क्योंकि कुए में ही भाँग पड़ी हुई है।** अतः जिधर देखो उन्हीं के झुण्ड नजर आते हैं। अब ऐसी तामसिक **शक्तियों** का अत्याचार अपनी चरम सीमा पर पहुँच चुका है। मैं ऐसे कई सज्जन लोगों से मिला हूँ, जब वे किसी संत के चमत्कारों की प्रशंसा करके उसके गुणों का बखान करते हैं तो मुझे उन सीधे-साधे और ईश्वर के प्रति जिज्ञासु लोगों पर बहुत तरस आता है।

मैं चुपचाप सुनकर हँस देता हूँ। सभी घटी हुई घटना को इस प्रकार बताते हैं कि बेचारे भोले भाले लोग उनको अच्छा संत समझ कर, अच्छी भेंट-पूजा करते हैं। कर्ण पिशाचनी अपने सीमित दायरे के अन्दर साधारण व्यक्ति के मन की बात जान कर, उस व्यक्ति को बताने में सक्षम होती है जिसके अधीन वह कार्य करती है।

अब वह तथाकथित संत जितना अधिक चतुर होगा उतना ही भौतिक लाभ उठाते हुए पर्दे के पीछे असलियत को छिपाये रखेगा। आध्यात्मिकता के नाम पर आज इसी शक्ति का बोलबाला है। **अन्धों में काणा ही राजा होता है,** ठीक वही हालत आज संसार में आध्यात्मिक क्षेत्र में सर्वत्र व्याप्त है। **''धर्म प्रत्यक्षानुभूति का विषय है। इसमें उपदेश और अन्य भौतिक चमत्कार होते ही नहीं।''** जिस प्रकार सूर्य के निकलते ही अन्धकार पूर्ण रूप से समाप्त हो जाता है और किसी को कुछ भी वस्तु दिखाने की जरूरत नहीं होती, हर व्यक्ति स्वतः ही स्वयं हर वस्तु को देखने में सक्षम हो जाता है। उस परम सत्ता से जुड़े हुए संत के साथ क्षणभर ही सत्संग करने से मनुष्य के अन्दर ऐसी रोशनी प्रकट हो जाती है कि उसे बताने की कोई आवश्यकता ही नहीं होती। **उसका पथप्रदर्शन स्वयं सात्विक शक्तियाँ करने लगती हैं** क्योंकि प्रकाश होने पर अंधेरा भाग जाता है, ठीक वैसे ही उस व्यक्ति में सात्विक शक्तियों के चेतन होते ही तामसिक शक्तियाँ कोसों दूर भाग जाती हैं।

ऐसी स्थिति में जब उसे स्वयं सब दिखने लगता है तो फिर उपदेश किस काम का। **उपदेश तो मात्र झूठी सांत्वना का नाम है।** उपदेश तो क्षणिक लाभ का प्रलोभन मात्र है। मैं देखता हूँ, संसार के अरबों लोग उपदेश सुन चुके हैं। अगर उससे कुछ लाभ होता तो आज संसार की ऐसी बुरी हालत कभी नहीं होती।

इस युग की भौतिक सत्ता पर पूर्ण रूप से तामसिक शक्तियों का अधिकार है। तामसिक शक्तियाँ अपने गुणधर्म के

शेष पृष्ठ 37 पर...

सद्गुरुदेव की दिव्य वाणी में मंत्र सुनना ही प्रभावी होता है

"जो ले जा रहे हो ना इसे, मेरी आवाज साथ रखो"

'मेरी आवाज साथ रखो' का सीधा सा अर्थ है कि सिद्धयोग दर्शन के प्रचार-प्रसार के दौरान जो भी साधक, किसी नये व्यक्ति को गुरुदेव का दिव्य मंत्र सुनाना चाहे तो वह गुरुदेव की दिव्य वाणी में रिकोर्डेड मंत्र अपने साथ रखें। क्योंकि गुरुदेव की दिव्य वाणी में मंत्र सुनना ही प्रभावी होता है।

"मैं राधा और कृष्ण के नाम की दीक्षा देता हूँ। राधा के बिना कृष्ण आधा। शिव से 'इ' की मात्रा हटा लो तो **'शव'** रह जाता है। इस प्रकार कोई भी मंत्र बिना शक्ति के काम नहीं करता। अब **गंगाईनाथ जी** का आदेश है। विवेकानन्द जी ने कहा कि मैं नहीं बोल रहा हूँ तो **मैं भी नहीं बोल रहा हूँ, मैं तो गंगाई नाथ जी का माइक हूँ।** रेलवे में रिटायरमेन्ट तो होता था, यह रिटायरमेन्ट भी नहीं देगा। इन्होंने अहैतु की कृपा की। मैं तो अपने आपको इस लायक नहीं समझता था।

महर्षि अरविंद ने कहा है कि **गुरु** जो **दीक्षा** देता है-अपने शिष्य को, वेदों की देता है, उपनिषदों की देता है, भगवान् के नाम की देता है तो उसकी आवाज में वो Weight (प्रभाव, सामर्थ्य) होता है। मेरी आवाज साथ रखो। आवाज के बिना Effect (प्रभाव) नहीं होगा।"

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग
संदर्भ-जोधपुर आश्रम-30 जुलाई 2009 शक्तिपात दीक्षा कार्यक्रम का प्रवचन

-**'मेरी आवाज साथ रखो' अर्थात् दीक्षा के लिए प्रथम बार गुरुदेव की आवाज में ही "मंत्र" साधक के कानों में पड़ना चाहिए तभी वह मंत्र फलीभूत होगा।** बहुत से पुराने साधक और नये साधक भ्रमित हो रहे हैं कि गुरुदेव ने आवाज साथ रखने का बोला है। इसलिए कई साधक ध्यान करते समय गुरुदेव का मंत्र वीडियो चलाकर ध्यान करते हैं जो सही नहीं है। 'मेरी आवाज साथ रखो' का इतना सा अर्थ है कि जो भी दीक्षित साधक किसी नये व्यक्ति को गुरुदेव का दिव्य मंत्र सुनाना चाहे तो वह गुरुदेव की दिव्य वाणी में रिकोर्डेड मंत्र अपने साथ रखें। क्योंकि "**मंत्र**", गुरुदेव की दिव्य वाणी में सुनना ही प्रभावी होता है।

ध्यान करते समय भी गुरुदेव का मंत्र-मोबाइल या लाऊड स्पीकर से चलाकर ध्यान नहीं करना है। मानसिक मंत्र जप के साथ ध्यान करना है। गुरुदेव के जीवन काल में कितने ही कार्यक्रम आयोजित हुए थे लेकिन मंत्र सुनाने के बाद शांत मन से ही, मंत्र के मानसिक जप के साथ ध्यान किया जाता था। सो सभी साधक इस बात का ध्यान रखें। कुछ ऐसा भी सुनने में आया है कि कुछ साधकों ने **मंत्र जपने के यंत्र** बना लिये हैं और दूसरे मंत्रों की तरह दिन भर घर में बजते रहते हैं। उन साधकों से भी निवेदन है कि इससे आपके लिए मंत्र की महता ही खत्म हो जायेगी। जो आदेश गुरुदेव ने दिया है, जैसा बोला है, साधक वैसा करेगा तभी मंत्र फलीभूत होगा। मंत्र का मानसिक जप ही आराधना का मूल है, परम कैवल्य पद तक पहुँचने का मुख्य पथ है।

यह मंत्र भीतर ही भीतर जपा जाएगा, तभी काम करेगा। बहुत से नये लोगों के फोन आते हैं और कुछ पुराने साधक भी जिन्होंने अपने मन से कुछ सिद्धांत बना लिये हैं। उन लोगों का कहना है कि मानसिक मंत्र जप से घुटन सी महसूस होती है, इसलिए मंत्र बोलकर जपने में क्या हर्ज है? तो उन लोगों के लिए यह बात है कि **मंत्र एक महाविज्ञान है।**

विज्ञान, सिद्धांतों के आधार पर ही प्रयोगों से सिद्ध होता है। इस ब्रह्माण्ड का बीज-"**मंत्र**" में नीहित है और जिस प्रकार जमीन में बीज डालकर उसके ऊपर रेत से ढ़का जाता है तभी वह अंकुरित होता है। इसी प्रकार इस **'बीज मंत्र'** को मानस पटल पर बोया जाता है, तभी हृदय कंवल रूपी जमीन से मानव की आंतरिक चेतना का विकास और वृत्ति परिवर्तन की नई कोंपले फूटती हैं और समाधि रूपी विशाल वृक्ष के रूप में परिवर्तित होकर कैवल्य पद अर्थात् मोक्ष प्राप्ति का फल चखने को मिलता है।

❖❖❖

भारत के दो महामंत्र

पहला-वन्दे मातरम् और दूसरा-संजीवनी मंत्र (समर्थ सद्गुरु द्वारा प्रदत मंत्र जो भीतर ही भीतर उच्चरित होता है और मानवीय चेतना को दिव्य रूप में रूपान्तरित करने का मुख्य घटक है।)

''जब एक महान् जनसमुदाय धूल में से उठ खड़ा होता है तो कौन-सा मंत्र **''संजीवनी''** मंत्र है, अथवा उसे पुनर्जीवित करनेवाली कौनसी शक्ति है ? भारत में दो महामंत्र हैं-एक तो **'वंदे मातरम्'** का मंत्र है जो मातृभूमि के प्रति जनता के जाग्रत प्रेम की सार्वभौम पुकार है और दूसरा और अधिक गुप्त और रहस्यपूर्ण है, जो अभी उद्घाटित नहीं हुआ है।''

संदर्भ-श्री अरविन्द, 19 फरवरी 1908 'भारत का पुनर्जन्म' पुस्तक के पृष्ठ-37 पर

When a great crowd rises from the dust then what is the **'mantra'** that is **'Sanjeevani mantra'**, or what is the power that revives them? There are two great 'mantras' in India. The first one is 'Vande Matram' which is the universal cry of the awakened love for the Motherand and the second one is more secret and mystic and has not been revealed as yet.

Sri Aurobindo, 19 Feb 1908, Book-India's Rebirth, Page-37

''हमने **'वंदे मातरम्'** मंत्र का प्रयोग अपने सारे हृदय और आत्मा से किया, और जब तक हमने उसका उपयोग किया और उसे जिया, सभी कठिनाईयों को पार करने के लिए उसकी शक्ति पर निर्भर रहे, हम उन्नति करते गये। पर अचानक हमारे विश्वास और साहस ने हमें धोखा दे दिया, मंत्र की पुकार डूबने लगी और जैसे-जैसे उसकी गूँज कमजोर पड़ने लगी, **शक्ति** देश से तिरोहित होने लगी।

ईश्वर ने ही उसे मंद किया और डगमगा दिया क्योंकि वह अपना काम कर चुका था। 'वंदे मातरम्' से और अधिक महान् मंत्र आने वाला है। बंकिमचन्द्र चटर्जी भारतीय जागृति के अंतिम दृष्टा नहीं थे। उन्होंने केवल प्राथमिक और सार्वजनिक पूजा को शब्द दिये न कि **'आंतरिक गुप्त उपासना का सूत्र और अनुष्ठान'**। क्योंकि सबसे

''जब उस अंतिम मंत्र का अभ्यास दो या तीन व्यक्ति भी करेंगे तो ईश्वर का हाथ खुलना प्रारंभ होगा; जब उपासना का अनुसरण बहुत लोग करेंगे तो बंद हाथ बिल्कुल खुल जाएगा।''

श्री अरविन्द द्वारा कही गई बात बहुत ही गंभीर है और पूरे विश्व से जुड़ा हुआ विषय है। जिन साधकों ने सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के श्रीमुख से संजीवनी मंत्र सुन लिया है तो उसका परम कर्तव्य है-गुरु आज्ञा का पालन करते हुए, मंत्र का सघन मानसिक जप। सभी रोगों व नशों से मुक्ति, आत्मिक शांति व कैवल्य पद की प्राप्ति का सोपान है-**संजीवनी मंत्र का सघन मानसिक जप**। जो साधक इस यज्ञ में आहूति देना चाहते हैं, वो अपना अमूल्य समय व्यर्थ में नष्ट न करके ज्यादा से ज्यादा मंत्र का सघन जप करें-जैसा कि स्वयं सद्गुरुदेव सियाग ने कहा भी है कि **'मुझे वही शिष्य प्रिय है जो नाम जप करता है'**।

www.the-comforter.org

महान् वे मंत्र हैं जो भीतर ही उच्चरित किये जाते हैं और जिन्हें द्रष्टा (गुरु) अपने शिष्यों को स्वप्न अथवा संकल्पना में धीरे से कान में सुनाता है। (यह मंत्र सीधा सद्गुरु की वाणी में सुनना ही प्रभावी होता है।) जब उस अंतिम मंत्र का अभ्यास दो या तीन व्यक्ति भी करेंगे तो ईश्वर का हाथ खुलना प्रारंभ होगा; जब उपासना का अनुसरण बहुत लोग करेंगे तो बंद हाथ बिल्कुल खुल जाएगा।''

श्री अरविन्द, अगस्त 1920, 'भारत का पुनर्जन्म' पुस्तक, पृष्ठ-164

We used the Mantra **"Vande Mataram"** with our heart and soul, and so long as we used and lived it, relied upon its strength to overbear all difficulties, we prospered. But suddenly the faith and the courage failed us, the cry of the Mantra began to sink and as it rang feebly, the strength began to fade out of the country.

It was God, who made it fade out and falter, for it had done its work. A greater Mantra than **'Vande Mataram'** has to come. Bankimchandra Chattarji was not the final seer of Indian awakening. He gave the term only of the initial and public worship, not the aphorism and the ritual of the inner secret upasana (worship).

For the Greatest Mantras are those which are uttered within, and which the seer whispers or gives in dream or vision to his disciples. When that ultimate Mantra is practiced even by two or three, then the closed Hand of God will begin to open; when the practice will be followed by **numerous people, the closed Hand will open completly."**

Sri Aurobindo, Aug.1920, Book from "India's Rebirth, Page 154

(अब वह संजीवनी मंत्र उद्घाटित हो गया है-अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के संस्थापक व संरक्षक, प्रवृत्तिमार्गी समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के सिद्धयोग की देन शक्तिपात दीक्षा में सामूहिक रूप से दिया जाने वाला दिव्य मंत्र -संजीवनी मंत्र ही है।)

स्थानीय सूचना

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर

शाखा-गंगापुरसिटी आश्रम में

-प्रत्येक गुरुवार, समय- शाम-5.00 बजे से सामूहिक ध्यान का आयोजन होगा।

सद्गुरुदेव का अवतरण दिवस

रविवार, 24 नवम्बर 2019 को सुबह 10.30 बजे से शाखा स्तर पर स्थानीय साधकों द्वारा मनाया जाएगा।

स्थानः-दूध डेयरी के पास, ताजपुर रोड, राधा विहार कॉलोनी, चकछावा, पोस्ट-महुकला, गंगापुरसिटी, जिला-सवाईमाधोपुर (राज.)

संपर्कः-8209104535

समस्त जिज्ञासुगण सादर आमंत्रित हैं।

-:स्थानीय सूचना:-

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर

शाखा-कोटा में

सद्गुरुदेव का अवतरण दिवस

रविवार, 24 नवम्बर 2019 को सुबह 10.30 बजे से शाखा स्तर पर स्थानीय साधकों द्वारा मनाया जाएगा।

स्थानः-अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर शाखा-कोटा

केशोराय पाटन रोड़, जैन मंदिर के पीछे, ग्राम-सीन्ता, जिला-कोटा (राज)

संपर्क-9784742586

समस्त जिज्ञासुगण सादर आमंत्रित हैं।

नव सृजन के लिए.....भयंकर विनाश आ रहा है

क्या कलि का प्रथम सत्ययुग स्थापित करने के लिए सबसे महान् अवतार आनेवाला है ?.

सन् 1910-1912

लोग काफी समय से समाज सुधार और निर्दोष रूढ़िवादिता को लेकर अपने आप परेशान होते रहे हैं और बिना समाज सुधार आए ही रूढ़ीवादिता टूट गई है। किन्तु सारे समय, बातचीत के बावजूद, **ईश्वर** भारत में अपना काम कराता फिरता रहा है। लोगों के अनजाने, सामाजिक क्रांति अपने आप तैयार हो जाती है और उस दिशा में नहीं जो वे सोचते हैं, क्योंकि वह भारत ही नहीं सारे विश्व को अपने में समेट लेती है।

हम चाहें अथवा न चाहें, वह भारत के अतीत का और यूरोप के वर्तमान का कचरा झाड़ फेंकेगा। किन्तु हमेशा झाड़ू ही काफी नहीं होती है, कभी-कभी प्राथमिकता से वह **''तलवार''** का प्रयोग भी करता है। ऐसा संभव जान पड़ता है कि उसका प्रयोग भी होगा **क्योंकि विश्व अपने आप को जल्दी नहीं सुधारता, और इसलिए उसे हिंसात्मक रूप से सुधारना होगा।...**

लोग निराशा से चिल्लाते और रोते हैं कि सब कुछ नष्ट हो रहा है। किन्तु यदि वे **ईश्वर** के **प्रेम** और **बुद्धिमानी** में विश्वास रखें और उसकी अपेक्षा अपना दकियानूसी और ओछी धारणाओं को प्राथमिकता न दें तो वे इस बात पर जोर देंगे कि सभी का **पुनर्जन्म** हो रहा है।

काल पर और ईश्वर के अभी के उद्देश्य पर इतना कुछ निर्भर करता है कि हमें अपने नीम हकीमी उपचारों से चिपकने की बजाय, उसके उद्देश्य का पता लगाना अधिक महत्त्व का है।

पुरुष, युगात्मा, मृत्यु-आत्मा अपने भयंकर कार्य के लिए, उठ खड़ा हुआ है, लोकों का विनाश करने के लिए बढ़ गया है-**लोकक्षयकृत्प्रवृद्धः** (गीता, ११.३२) और **उसके आतंक, शक्तिमत्ता और अप्रतिरोध्यता को कौन रोक सकता है?** किन्तु वह केवल उस संसार का **''नाश''** कर रहा है, जो था। जो होने जा रहा है, उस संसार का तो वह **''सृजन''** कर रहा है, इसलिए हमारे लिए यह अधिक लाभदायक है कि *''हम उसका पता लगायें और जो वह निर्मित कर रहा है, उसमें सहायता करें''*, बजाय इसके कि जो वह नष्ट कर रहा है उसे अपनी बाहों में चिपटाकर रोयें... **कलियुग तो विनाश और पुनर्जन्म के लिए है,** पुराने से, जिसे अब और बचाया नहीं जा सकता, हताश होकर चिपटने के लिए नहीं।...

क्या उस विनाश का समय आ गया है?

हमारे विचार से तो वह आ गया है। पानी की उन हिलोरों का धमाका सुनो, जो आक्रमण की आवाज से भी ज्यादा विकट है-उस धीमे, रुष्ट और निष्ठुर खाई खोदने पर ध्यान दो-हमारे पैबंद लगे, बेढंगे, जर्जर ढांचे को तह पर तह क्षय होते, चरमराते, प्रहारों से थर्राते, टूटते, चुपचाप अथवा छपाके की आवाज के साथ, एकाएक अथवा थोड़ा-थोड़ा करके उन महान् तरंगों के खमीर में डूबते हुए देखो। क्या नवनिर्माण का समय आ गया है? हम कहते हैं कि हाँ। सक्रियता, उत्सुकता और मानव जाति की इधर से उधर भाग-दौड़, तीव्र पूर्वेक्षण, खोज करना, खोदना, नींव डालना ध्यान से देखो। अवतारों और महान् विभूतियों का आना, सघनता से उठना, एक के पीछे एक आगे बढ़ना देखो। क्या ये लक्षण नहीं हैं और क्या वे हमें नहीं बताते कि ''कलि का प्रथम **''सत्ययुग''** स्थापित करने के लिए सबसे महान् **''अवतार''** आनेवाला है?''

...हाँ, एक नया सामंजस्य संगीत, पर यूरोपीय भौतिकवाद की चरमराहट की आवाज नहीं, अर्ध सत्यों और मिथ्याचारों पर आधारित पाश्चात्य नींव नहीं। जब विनाश होता है तो स्वरूप नष्ट होता है, आत्मा नहीं क्योंकि संसार और उसके तौर-तरीके एक सत्य के स्वरूप हैं, जो इस भौतिक संसार में सतत् नये शरीर में प्रकट होते हैं।... इस चुनी हुई भूमि भारत में उस सत्य को सुरक्षित रखा जाता है; भारत की आत्मा में वह सोता है, उस आत्मा के जागरण की प्रतीक्षा में, उस भारतीय आत्मा के जो सिंहवत् है, ज्योतिर्मय है, प्रेम, शक्ति और प्रज्ञा के प्राचीन गद्य की बंद पंखुड़ियों में प्रतिबद्ध है, उसके दुर्बल, मैले, क्षणभंगुर और दयनीय बहिरंगा में नहीं। केवल **''भारत''** ही मानवजाति के भविष्य का निमार्ण कर सकता है।

संदर्भ-'भारत के पुनर्जन्म'
पुस्तक पृष्ठ-95-96

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

गुरुदेव सियाग सिद्धयोग

संस्था की वेबसाइट (www.the-comforter.org), यू-ट्यूब चैनल (Gurudev Siyag's Siddha Yoga - GSSY), फेसबुक (Avsk Jodhpur, Gurudev Siyag SiddhaYoga Avsk) व अन्य सोशल मीडिया से जानकारी प्राप्त कर जोधपुर मुख्यालय में वाट्सऐप व फोन पर हुई बातचीत के कुछ अंश-

सिडनी (आस्ट्रेलिया)
5.10.2019
श्री रांका भाई उम्र-75 वर्ष

सेवानिवृत्त अध्यापक हैं जो मूलतः गांधीनगर (गुजरात) के निवासी हैं और पिछले 5-6 साल से अपने बेटे के पास सिडनी में रहते हैं।

वर्षों से गायत्री आराधना, कई तरह के पूजा पाठ और कर्मकाण्ड करते हैं। जो भी आराधना सामने आई उसको ही अपना लिया लेकिन आत्मा को संतुष्टि नहीं मिल पाई है।

यू-ट्यूब(YouTube-Gurudev Siyag's Siddha Yoga-GSSY) पर गुरुदेव का मंत्र वीडियो सुनकर बहुत प्रसन्नता हुई और अपना गुरु मानकर, मंत्र का जप और ध्यान करना शुरू किया है। लेकिन दूसरी आराधनाएँ भी आदत में सुमार है इसलिए वांछित परिणाम नहीं मिल रहे हैं लेकिन जितना मंत्र जप और ध्यान करते हैं, उससे जीवन में कुछ नया बदलाव आना शुरू हुआ है।

मॉरीशस देश-5.10.2019
श्री अमृत रामबीस

यू-ट्यूब(YouTube-Gurudev Siyag's Siddha Yoga-GSSY) पर वीडियो देखने से जीवन में नई उमंग जगी है। कुण्डलिनी जागरण के प्रति विशेष रूचि है। गुरुदेव सियाग सिद्धयोग दर्शन की पूरी जानकारी प्राप्त कर मंत्र जप और ध्यान शुरू किया है।

दिल्ली-5.10.2019
श्री सुधीर भटनागर

पिछले लम्बे समय से हार्ट के मरीज है, कई तरह के इलाज ले चुके हैं लेकिन कोई फायदा नहीं हो रहा है। एक दिन यू-ट्यूब पर गुरुदेव का वीडियो देखा और सुना तो बहुत अच्छा लगा। अब लग रहा है कि कुछ स्वास्थ्य सुधार होगा।

कुवैत देश-5.10.2019
श्री अमृतलाल के.
मूलतः उदयपुर (राज.) के निवासी है।

यू-ट्यूब(YouTube-Gurudev Siyag's Siddha Yoga-GSSY) पर वीडियो देखा है। कुण्डलिनी जागरण के प्रति मेरी विशेष रूचि है। मैंने कई वीडियो देखे हैं। इतनी स्पष्ट बात कहने वाले वर्तमान में ऐसे महान् गुरु, मैंने नहीं सुने।

कानपुर (उ.प्र) 5.10.2019
डॉ. एस के मिश्रा

से हुई बातचीत के आधार पर उन्हीं के शब्दों में-''मैंने यू-टयूब (YouTube-Gurudev Siyag's Siddha Yoga-GSSY) पर देखा है। गुरुदेव सियाग जी महाराज का आश्रम कहाँ पर है, मुझे आना है। मुझे आराधना करने, दीक्षा लेने के लिए क्या करना पड़ेगा?

मैं बहुत प्रभावित हूँ। क्या मुझे दीक्षा लेने के लिए जोधपुर आना पड़ेगा या मैं यहीं बैठे मंत्र जप और ध्यान कर सकता हूँ?''

उनको बताया गया कि सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग की दिव्य वाणी में संजीवनी मंत्र सुनना ही दीक्षा है और आप अपने घर बैठे ही इस आराधना को कर सकते हो। इस बात से उन्हें बहुत खुशी हुई।

फिर उन्होंने कहा- ''मेरी एक और दुविधा है कि मैंने पहले से किसी दूसरे गुरु से मंत्र ले रखा है तो क्या मैं दोनों ही मंत्र बारी बारी से जपूं या छोड़ दूँ, मेरा मार्गदर्शन करें !''

उनको बताया गया कि यदि आप गुरुदेव सियाग के सिद्धयोग दर्शन से लाभान्वित होना चाहते हैं तो आपको मंत्र तो एक ही गुरु का जपना पड़ेगा।

एक सिद्धांत भी है-**एक साधे सब सिद्धै, सब साधें सब जाय।**

उन्होंने कहा-''यह बात तो बिल्कुल ठीक है। मुझे यही शंका हो रही थी इसलिए मैंने फोन करके जानना

www.the-comforter.org

चाहा है क्योंकि मुझे अभी तक कोई परिणाम नहीं मिला है। और जब से मैंने यू-ट्यूब (YouTube-Gurudev Siyag's Siddha Yoga-GSSY) पर वीडियो देखा है तब से आत्मा की यही आवाज है कि मैं सियाग जी महाराज का मंत्र जप और ध्यान करूँ। मुझे इनका ही ध्यान करना है।''

सागर (म.प्र) 6.10.2019
डॉ. चहवाण-52 वर्ष

उन्होंने कहा-''मैं गुरुदेव से बात करना चाहता हूँ। उनसे दीक्षा कैसे ली जाये ? मैंने अभी-अभी ही यू-ट्यूब (YouTube-Gurudev Siyag's Siddha Yoga-GSSY) पर गुरुदेव का मंत्र वीडियो देखा है। मुझे मंत्र जपने के लिए क्या माला के सहारे जपना पड़ेगा ?''

उनको बताया गया कि मंत्र का मानसिक जाप करना है। इसके लिए माला की जरूरत नहीं है। फिर उन्होंने कहा कि उन्हें गुरुदेव से मिलना है तो उनको बताया कि गुरुदेव अब भौतिक रूप में नहीं है, परन्तु उनकी आध्यात्मिक शक्ति, उनकी तस्वीर के माध्यम से, दुनिया में अद्भुत बदलाव ला रही है।

फिर उन्होंने कहा कि वो बहुत परेशान हैं और उन्हें गुरुदेव की आराधना करनी हैं।

-फिर उनको सिद्धयोग दर्शन की पूरी जानकारी देकर, ध्यान की विधि बताई गई।

छप्परा (बिहार)
5.10.2019
श्री नारायण शुक्ला

ने यू-ट्यूब (YouTube-Gurudev Siyag's Siddha Yoga-GSSY) पर गुरुदेव का वीडियो देखा तो उन्हें बहुत अच्छा लगा। उन्हें ऐसा आभास होता है कि उनके साथ कोई चमत्कार सा हो रहा है।

-पूना (महाराष्ट्र)
5.10.2019
श्री अमित गोवलकर-40 वर्ष

जीवन से पूरी तरह से हार चुके हैं। अवसाद पूर्ण जीवन जी रहे हैं। बी. पी, लकवा, मानसिक अशांति और न जाने कितनी ही बीमारियों से ग्रसित हैं। कोई भी दवाई कारगर नहीं हो रही है। लकवे का इलाज चल रहा है। उसमें थोड़ा सुधार हुआ है। यू-ट्यूब पर गुरुदेव का वीडियो देखकर कुछ उम्मीदें जगी है। अब आराधना ही जीवन का मुख्य ध्येय है, यही नई जिन्दगी का एहसास करा सकती है।

-हिसार (हरियाण)
श्री अमित कुमार
5.10.2019

संयोगवश यू-ट्यूब पर गुरु महाराज का वीडियो देखा, जो वर्तमान के बाबाओं से भिन्न नजर आया। सुनकर बहुत अच्छा लगा। आध्यात्मिक ज्ञान में विशेष रूचि है। अब मंत्र जप और ध्यान करना है।

मुम्बई (महाराष्ट्र)
6.10.2019
मराठी फिल्मी डायरेक्टर

मैं बचपन से ही धार्मिक प्रवृत्ति का व्यक्ति रहा हूँ। नाथ संप्रदाय से जुड़ा हुआ हूँ। गुरु श्री गोरखनाथ जी, श्री मत्स्येन्द्रनाथ जी, श्री दत्तात्रेय जी आदि से बहुत प्रभावित हूँ।

पिछले 15 दिन से यू-ट्यूब (YouTube-Gurudev Siyag's Siddha Yoga-GSSY) पर गुरुदेव का वीडियो देखा और कुछ अद्भुत सा लगा। फिर जोधपुर आश्रम पर कॉल कर आराधना संबंधी जानकारी लेकर, मंत्र जप के साथ ध्यान शुरू किया तो मेरा पहले दिन से ही ध्यान लगना शुरू हो गया। मुझे बड़ी ही अद्भुत अनुभूतियाँ होने लगी। मंत्र भी अजपा जाप में बदल गया है। मेरा पूरा समर्पण गुरुदेव के प्रति हो गया है। मुझे तेज गति से आध्यात्मिक प्रगति करने के लिए क्या करना चाहिए ?

मुझे जब भी कोई संदेह होता है तो मैं जोधपुर आश्रम कॉल करके जानकारी ले लेता हूँ। गुरुदेव के सिद्धयोग दर्शन से शतप्रतिशत लाभ हो रहा है। मैं जिस भी कार्य के लिए प्रार्थना करता हूँ तो मेरा कार्य संपूर्ण होता है। जो नहीं होता है तो मैं यही सोचता हूँ कि मेरे लिए सही नहीं था। मुझसे ज्यादा मेरे गुरु जानते हैं कि **'मेरे लिए क्या सही है, और क्या नहीं ?'** इस ब्रह्माण्ड में सद्गुरुदेव से ज्यादा हमारे हित की बात और कोई नहीं चाहता है।

मंत्र जप और नियमित ध्यान से असीम आनंद की अनुभूति हो रही है। लेकिन मेरी एक शंका है। इस शंका का मैंने सोशल मीडिया पर जुड़े कुछ साधकों से समाधान करने की कोशिश की लेकिन मुझे कोई सार्थक, संतोषजनक जवाब नहीं मिला।

मेरी शंका यह है:-मैंने गुरुदेव के जर्जर शरीर को देखा और मुझे बड़ा दुःख हुआ कि अंतिम समय में गुरुदेव बहुत ज्यादा बीमार थे। उन्होंने बीमारी

और बुढ़ापे के कारण सन् 2017 में शरीर त्याग दिया। मैंने सुना है-धार्मिक ग्रंथों के माध्यम से, अन्य संतों के माध्यम से और गुरुदेव के श्री मुख से भी सुना है कि कुण्डलिनी जागरण होने पर साधक में बड़ा ही अद्भुत बदलाव आता है तो फिर गुरुदेव इतने बूढ़े क्यों हुए, इतनी बीमारी से क्यों गये?

क्या कुण्डलिनी जाग्रत होने पर हमारी भी यही स्थिति होगी?

ये मेरी बहुत बड़ी शंका है, मुझे घबराहट होती है। मेरी शंका का समाधान कीजिए।

जवाबः-गुरु, निर्गुण निराकार ईश्वर के सगुण साकार रूप होते हैं। शिष्य के कल्याण के लिए, उनके सारे दुःख-दर्दों को अपने ऊपर लेकर, उनके कष्टों को अपने शरीर में भोगकर, शिष्य का आध्यात्मिक मार्ग प्रशस्त करते हैं। गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग युग परिवर्तन की इस संधिकाल में **अवतार** और **गुरु** दोनों ही रूपों में अवतरित हुए हैं। इसलिए पूरी दुनिया की तामसिक शक्तियों से युद्ध भी उन्होंने स्वयं लड़ा।

चुंकि ईश्वर, मानव मात्र का उद्धार करने के लिए मानवीय देह धारण करते हैं तो मानव प्रकृति की सारी अपूर्णताओं को भी अपने ऊपर ओढ़ लेते हैं। उनके सदा दो रूप होते हैं एक भागवत स्वरूप जो सर्वव्यापकता को दर्शाता है और दूसरा मानवीय रूप जिसकी आम मानव की सी सीमाएँ, दुःख, दर्द, पीड़ा, रोग, शोक, बुढ़ापा आदि सभी दृष्टिगोचर होते हैं। अब जो दिखता है, वो सत्य नहीं है, उसके परे भी कुछ और है।

गुरु सदैव ही अपने शिष्यों के कठिन और पीड़ादायक समय को अपने ऊपर ले लेते हैं।

शिष्य में दूसरों का दुःख-दर्द वहन करने की सामर्थ्य नहीं होती है। उसको तो अपने गुरु के बताए पथ पर चलकर आराधना कर अपना कल्याण करना चाहिए।

एक बार ऐसे ही कोई बातचीत चल रही थी तो एक शिष्य ने अपनी कुछ शंकाएँ गुरुदेव के सामने रखीं तो गुरुदेव ने बड़ा ही सटीक जवाब दिया कि आपके ऊपर कोई संकट आता है और आप मुझे याद करते हो तो मैं झेल लेता हूँ, दूर कर देता हूँ लेकिन मेरे ऊपर कोई दुःख दर्द आए तो मैं किसको याद करूँ? वो मुझे ही झेलना पड़ता है।

ऐसा ही एक उदाहरण श्री रामकृष्ण परमहंस जी के जीवन का भी है। किसी ने उनसे पूछा कि आपके गले में ये कैंसर क्यूं हुआ तो श्री रामकृष्ण ने कहा कि ये, मैं मेरे शिष्यों के लिए भोग रहा हूँ।

अर्थात् गुरु, शिष्यों का दुःख दर्द अपने ऊपर लेकर, शिष्य को निर्मल सुगंधित पुष्प सा बनाकर, **सहस्र दल कमल** अर्थात् **सहस्रार** में परमब्रह्म परमेश्वर के स्वरूप में बदल देता है।

लेकिन यह तभी संभव है जब शिष्य का अपने सद्गुरु के प्रति पूर्ण समर्पण हो।

इससे वे पूर्णरूप से संतुष्ट हो गए। उन्होंने कहा कि गुरुदेव के प्रति उनका विश्वास बढ़ता ही जा रहा है।

-सागर (मध्यप्रदेश)
6.10.2019

कुमारी रूपाली-ग्यारहवीं की छात्रा हैं। पढ़ाई के समय आलस घेर लेता है। अपनी पढ़ाई में निखार लाने के लिए यू-ट्यूब (YouTube-Gurudev Siyag's Siddha Yoga-GSSY) पर गुरुदेव का वीडियो देखकर मंत्र जप और ध्यान शुरू कर दिया है और बहुत अच्छा लग रहा है।

-दुबई 6.10.2019

अजमेर (राज.) के निवासी हैं। पिछले 5-6 महिने से दुबई में काम रहे हैं। कुछ परिस्थितियों को लेकर बहुत परेशानी में थे। मानसिक अवसाद का शिकार हो गये थे। कुछ भी सूझ नहीं रहा था कि क्या करें?

देवसंयोग से यू-ट्यूब पर गुरुदेव का वीडियो देखकर, बताई गई विधि के अनुसार सुबह-शाम मंत्र जप और ध्यान शुरू कर दिया, उससे उन्हें योग शुरू हो गया और उन्हें सारी परेशानियों से छुटकारा मिल गया।

उन्होंने कहा- ''अब मैं यहाँ पर अकेला नहीं हूँ। मेरे गुरुदेव मेरे साथ हैं।''

वेनेजुएला देश-7.10.2019
सैमुअल-39 वर्ष

24 नवम्बर 2011 से दीक्षित हैं। गुरुदेव के प्रति समर्पित हैं। अपने देश में डॉक्टर हैं।

उन्होंने बताया- ''जब मैं 14 वर्ष का था तब से भारत आकर गुरु धारण करने की सनक सवार थी लेकिन गरीबी के कारण भारत नहीं आ सका। नाथ योगियों के प्रति मेरी गहरी रूचि है। संन्यासी जीवन जीने की चाह है।''

वाट्सऐप पर हुई बातचीत में उनको गुरुदेव के सिद्धयोग दर्शन की पूरी जानकारी दी गई।

चूरू (राज) 7.10.2019

www.the-comforter.org

श्री करणसिंह

वर्षों से योगाभ्यास कर रहे हैं। योग दर्शन के प्रति गहरी रूचि है। लेकिन शरीरिक कसरत के सिवाय कुछ भी अनुभव नहीं हुआ था। देवसंयोग से एक दिन यू-ट्यूब पर गुरुदेव सियाग का वीडियो देखा तो बहुत प्रभावित हुए। गुरुदेव के बताए अनुसार मंत्र जप के साथ ध्यान शुरू किया तो पहले दिन से ही उनके शरीर में बिना चाहे ही यौगिक क्रियाएँ शुरू हो गईं। यह घटना उन्हें बहुत ही अद्भुत लगी।

उन्होंने कहा-''इस तरह से योग होना तो बहुत बड़ा विज्ञान है, जो समझ से परे है। यू-ट्यूब पर वीडियो देखा और सैंकड़ों किलोमीटर दूर बैठे गुरु की तस्वीर से ध्यान लगना तो बहुत आश्चर्य की बात है।'' जब उन्होंने आश्रम पर फोन से बात की तो उनको पता चला कि पूज्य सद्गुरुदेव भौतिक शरीर में भी नहीं है तो उनको और भी आश्चर्य हुआ कि केवल उनकी तस्वीर से ही इतनी सुन्दर अनुभूति हुई।

कांगड़ा (हिमाचल प्रदेश)
श्री रविन्द्र नाथ बैजनाथ-43 वर्ष
7.10.2019

जीवन में बड़ा संघर्ष चल रहा है। कई बीमारियों से ग्रस्त हैं। लेकिन आध्यात्मिक खोज बचपन से ही रही है। अब यू-ट्यूब(YouTube-Gurudev Siyag's Siddha Yoga-GSSY) पर गुरुदेव का वीडियो देखने के बाद अध्यात्म में गहरी रूचि जगी है।

केशवपुरम (दिल्ली)
श्री मलिक
8.10.2019

श्री मलिक एक व्यापारी हैं। उनका काम है पूरे भारत में घूमकर अपने प्रोडक्ट्स का प्रचार करना। उन्होंने बताया कि जीवन में अब तक 26 गुरु धारण कर चुके हैं। तत्त्व ज्ञान की सनक सवार है लेकिन अभी तक कोई सार्थक परिणाम मिला नहीं है परन्तु आत्मा ने हार नहीं मानी है। उनका महीने में 20-25 दिन ट्रेन यात्रा में ही निकलता है। यू-ट्यूब पर सर्च करते वक्त गुरुदेव का वीडियो मिल गया। उसमें बताई विधि के अनुसार मंत्र जप और ध्यान किया तो ट्रेन में स्वतः ही यौगिक क्रियाएँ शुरू हो गई। शरीर में बहुत ज्यादा कंपन्न शुरू हो गया। आज तीन दिन हुए हैं, कई लोगों को वीडियो शेयर कर चुके हैं।

कलकता (प. बंगाल)
श्री उत्तम कुमार देह
8.10.2019

जीवन में वर्षों से पूजा पाठ आदि करते आ रहे हैं। दिनचर्या का एक हिस्सा है और सुबह शाम कर लेते हैं लेकिन कोई आध्यात्मिक अनुभूति नहीं हुई। यू-ट्यूब (YouTube-Gurudev Siyag's Siddha Yoga - GSSY) पर गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग का वीडियो देखा और उनकी वाणी को सुना तो भीतर से आत्मा झंकृत हुई और उन्हें बहुत अच्छा लगा। उन्होंने कहा- ''अब हमें दीक्षा के लिए क्या करना पड़ेगा ? हमारा मार्गदर्शन करें !''

उन्हें सिद्धयोग दर्शन की पूर्ण जानकारी देकर, ध्यान की विधि बताई गई।

आरा (बिहार)
श्री ओमप्रकाश
8.10.2019

उन्होंने बताया- ''सन् 2014 में जोधपुर आश्रम में दीक्षा ली थी। उस समय मैं जोधपुर में काम करता था। कुछ दिनों तक मंत्र जप और ध्यान किया, फिर छोड़ दिया। कभी याद आई तो कर लिया अन्यथा नहीं। पिछले काफी समय से कभी भी ध्यान नहीं किया। अभी एक दिन अचानक यू-ट्यूब (YouTube-Gurudev Siyag's Siddha Yoga - GSSY) पर गुरुदेव का वीडियो देखा तो गुरुदेव के प्रति श्रद्धा जगी और मैंने मंत्र जप और ध्यान वापस शुरू कर दिया है।''

करौली (राज.)
श्री चेतराम, अध्यापक
8.10.2019

फोन पर हुई बातचीत के अनुसार , इन्होंने बताया कि वह पिछले 10-12 वर्षों से गायत्री मंत्र की आराधना कर रहे हैं। किसी अन्य गुरु से दीक्षित भी हैं। पूर्ण ज्ञान की जिज्ञासा है। अभी तक आत्मा की तृप्ति नहीं हुई है इसलिए खोज जारी है। अभी यू-ट्यूब (YouTube-Gurudev Siyag's Siddha Yoga - GSSY) पर गुरुदेव का वीडियो देखकर, आशा की एक नई किरण जगी है।

द्वारिका (गुजरात)
श्री मगनदेव उपाध्याय
8.10.2019

इन्होंने बताया कि इनके दामाद को हेपेटाइटिस-बी और कैंसर है। बहुत इलाज कराया लेकिन कहीं से भी कोई सार्थक परिणाम नहीं मिला। फिर भी प्रयास जारी है। इन प्रयासों के तहत ही यू-ट्यूब (YouTube-Gurudev Siyag's Siddha Yoga - GSSY) पर गुरु महाराज का वीडियो देखा तो बहुत खुशी हुई कि इतना प्यारा और सटीक बोलते हैं कि मैंने मेरे जीवन में

www.the-comforter.org

ऐसा कभी नहीं सुना। फिर उन्हें सिद्धयोग दर्शन की संपूर्ण जानकारी दी गई।

झाँसी (उ.प्र)
विनोद कुमार
9.10.2019

उन्होंने कहा-''कुण्डलिनी जागरण और ऐसे गुरु जो इसे जाग्रत करने की बात करते हैं- ऐसा मैंने दुनिया में पहली बार सुना। यू-ट्यूब (YouTube-Gurudev Siyag's Siddha Yoga - GSSY) पर गुरुदेव का वीडियो देखकर, मैं बहुत प्रभावित हुआ। अब मैं गुरुदेव से दीक्षा लेकर मंत्र जप और ध्यान करना चाहता हूँ। मुझे अपनी कुण्डलिनी जाग्रत करनी है। मैंने दुनिया में घणे ही संत देखे हैं लेकिन ऐसा स्पष्ट कोई नहीं बोलता है।''

उन्होंने कहा-''मुझे एक बार उनके दर्शन करने है। मैं कब और कैसे जोधपुर आऊँ? विस्तार से बताइये।'' फिर उनको सिद्धयोग दर्शन की पूरी जानकारी दी गई और उनको बताया गया कि सद्गुरुदेव की आवाज में मंत्र सुनना ही दीक्षा है और यह कार्य आप अपने घर बैठे ही कर सकते हो।

लेकिन उनकी हार्दिक इच्छा है कि एक बार जोधपुर आश्रम आकर गुरुदेव के आसन पर धोक लगाए।

हैदराबाद (तेलंगाना)
श्रीमती अरूणा-58 वर्ष
9.10.2019

इन्होंने बताया-''मैं चार दिन से यू-ट्यूब (YouTube-Gurudev Siyag's Siddha Yoga-GSSY) पर लगातार गुरुदेव के वीडियो ही देख रही हूँ। मुझे बहुत अच्छा लग रहा है। मैं बचपन से ही श्री कृष्ण और राधा की भक्ति कर रही हूँ। नाथ संप्रदाय में श्री गोरखनाथ जी के प्रति भी विशेष श्रद्धा भक्ति है। मेरी बचपन से ही ईश्वर की प्रत्यक्षानुभूति, कुण्डलिनी जागरण, आदि विषयों में रूचि रही है। गुरुदेव के वीडियो में कहीं भी मुझे कुछ भी गलत या संदेह युक्त नहीं लगा। गुरुदेव बहुत सुन्दर बोलते हैं। **मुझे बड़ा पश्चाताप हो रहा है कि मुझे इतनी देरी से क्यों मिले,** जब मैं 58 साल की हो चुकी ! मुझे पहले क्यों नहीं मिले ?

काश ! **मुझे बहुत पहले मिल जाते तो मैं उनके चरणों की धुलि को अपने सिर पर धारण कर पाती।** यह पश्चाताप तो जीवन भर रहेगा ही लेकिन जब इनकी वाणी को सुनती हूँ तो आत्मा गदगद् हो जाती है। अब मैं एक पल की भी देरी नहीं करूँगी। बस अब मुझे इनकी भक्ति करनी है क्योंकि ये राधा और कृष्ण का मंत्र देते हैं जो बचपन से ही मेरे आराध्य रहे हैं।''

नैनीताल (उत्तराखण्ड)
श्री विनोद कुमार
9.10.2019

इन्होंने कहा-''मैंने यू-ट्यूब (YouTube-Gurudev Siyag's Siddha Yoga-GSSY) पर गुरुदेव का वीडियो देखा है। मैं बहुत प्रभावित हुआ हूँ। इनसे दीक्षा लेकर कुण्डलिनी जाग्रत करना चाहता हूँ। मुझे क्या करना पड़ेगा ? मुझे गुरु महाराज से मिलना है।'' फिर उनको सिद्धयोग दर्शन की पूरी जानकारी दी गई।

सिडनी (ऑस्ट्रेलिया)
श्री मेहूल-37 वर्ष
10.10.2019

इन्होंने बताया-''मैंने पहली बार कल गुरुदेव का मंत्र सुनकर, गुरुदेव की तस्वीर को सामने रखकर, 15 मिनट का समय माँगकर ध्यान किया तो मुझे बड़ा ही अद्भुत आभास हुआ। मेरी गर्दन ध्यान के दौरान 15 मिनट तक पीछे जाती ही रही, उस दौरान बहुत ही आनंद आ रहा था। मुझे लगा कि मेरी गर्दन पूरी तरह से मुड़ गई है। मैंने शुरू में इसे रोकने का प्रयास किया लेकिन मैं रोक नहीं पाया। मेरे दो बेटे है, वे बहुत चिल्ला रहे थे लेकिन मेरा ध्यान नहीं टूटा। उनकी आवाज मुझे बहुत धीमी गति से आ रही थी परन्तु मुझे इससे कोई बाधा महसूस नहीं हुई।

वैसे मैं वर्षों से आराधना कर रहा हूँ। कुण्डलिनी जागरण में मेरी विशेष रूचि भी है। सिडनी में ही एक संस्थान से जुड़ा हुआ हूँ, जहाँ पर कई प्रकार के यौगिक अभ्यास करवाये जाते हैं लेकिन जो अनुभव मुझे 15 मिनट में हुआ है, वैसा मुझे कभी नहीं हुआ ! 15 मिनट होते ही मेरा ध्यान खुल गया। यह तो पूरा विज्ञान है।

अब मेरी तीव्र इच्छा हो रही है कि मैं एक बार **जोधपुर आश्रम** आकर गुरुदेव के चरणों में धोक लगाऊँ।

इतने वर्षों बाद मुझे जो ज्ञान मिला है इसकी मुझे इतनी खुशी हो रही है कि मेरे पास कोई शब्द नहीं है।

My experiences during meditation have been very sweet and beautiful. I am so very happy."

चाम्पा (छत्तीसगढ़)

www.the-comforter.org

श्री धर्मलाल कार्तेकेय-40 वर्ष
10.10.2019

इन्होंने बताया-''यू-ट्यूब (YouTube-Gurudev Siyag's Siddha Yoga - GSSY) पर गुरुदेव का वीडियो देखा है। मुझे कुण्डलिनी जागरण करवाना है। मुझे दीक्षा लेनी है और मुझे क्या परहेज करना पड़ेगा? बस मुझे दीक्षा लेनी है। मेरी मुख्य जिज्ञासा कुण्डलिनी जागरण की है। और यह आराधना मुझे कितने समय तक करनी पड़ेगी?''

उनको सिद्धयोग दर्शन की पूरी जानकारी दी गई और यह बताया गया कि यह आराधना अपने सर्वांगीण विकास के लिए जीवन भर करनी होगी। उन्हें बताया कि कुछ लोग अपनी परेशानी मिटाने के लिए कुछ समय तक मंत्र जप और ध्यान करते हैं और कुछ राहत मिलते ही छोड़ देते हैं, जिससे कि सिद्धयोग दर्शन का पूर्ण लाभ उन्हें नहीं मिल पाता। **इस आराधना को एकनिष्ठ होकर, जीवन पर्यन्त करना है।** सद्गुरुदेव के प्रति पूर्ण समर्पण भाव आने पर ही परिवर्तन आता है।

अहमदाबाद (गुजरात)
श्री सूरज प्रकाश
11.10.2019
(YouTube-Gurudev Siyag's Siddha Yoga-GSSY)

इन्होंने बताया-''मैंने पहले से ही एक गुरु धारण कर रखे हैं। पिछले एक साल से योग साधना कर रहा हूँ। कुछ अनुभव भी हुए हैं। मैं साँसों पर ध्यान करता हूँ। दो बार आकाश में उड़ने जैसे अनुभव हुए लेकिन मैं डर गया फिर उस दृश्य को नियंत्रित कर नहीं पाया और मुझे बहुत ज्यादा घबराहट होने लगी और मेरा ध्यान भंग हो गया।

मेरे जीवन में अचानक 2-4 दिन पहले ही गुरुदेव का वीडियो आया और मैंने देखा तो मुझे बहुत अच्छा लगा।

गुरुदेव सियाग सिद्धयोग की सत्यता को परखने के लिए, मैं ध्यान करने के लिए बैठा और सिर्फ दो मिनट के ध्यान से ही मेरे तालु और सहस्रार में ऐसी गुदगुदी हुई जो बड़ी ही अजीब थी और मैंने तुरंत ध्यान खोल दिया और मैंने तय कर लिया कि अब तो गुरुदेव के सामने बैठ कर ही पूर्ण मनोयोग से ध्यान करूँगा। एक बार जोधपुर आश्रम आने की प्रबल इच्छा है। मुझे यह कुण्डलिनी जनित योग सीखना है।''

फिर उनको सिद्धयोग दर्शन की जानकारी देकर, ध्यान की विधि बताई गई।

दिल्ली
श्रीमती विजया-35 वर्ष
11.10.2019

इस महिला को सिद्धयोग दर्शन में वर्णित कुण्डलिनी जागरण में विशेष अभिरूचि थी। इन्होंने, जोधपुर आश्रम पर, यू-ट्यूब पर वीडियो देखकर कॉल किया और अपनी हर शंका का समाधान ढूँढ़ने का प्रयास किया।

उनको आराधना के विषय में यह समझाया गया कि सुबह-शाम मंत्र जप के साथ 15-15 मिनट खाली पेट ध्यान और 24 घंटे मंत्र जपना है।

इस साधिका ने रात को सोने से पहले सोचा कि अभी मुझे ध्यान तो करना नहीं है, वो तो सुबह करना है इसलिए थोड़ी देर के लिए मंत्र जप कर लेती हूँ। उन्होंने 5 से 10 मिनट ही मंत्र जपा होगा कि उनको शरीर में इतनी गर्मी महसूस हुई कि उन्हें लगा कि नस-नस फट जाएगी।

उन्होंने कहा-''मुझे रात भर नींद भी नहीं आई और मैं गुरुदेव से करूण प्रार्थना करती रही कि हे गुरुदेव ! बस अब ये रुक जाए, मैं इतने तीव्र आवेग को सहन नहीं कर पा रही हूँ।''

फिर दूसरे दिन कॉल करके उन्होंने अपना यह अनुभव सुनाया।

आगे उन्होंने यह कहा-''अब मैं नियमित मंत्र जप और ध्यान कर रही हूँ। विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाएँ होती हैं। पहले मुझे नींद की समस्या थी। नींद की गोली खाने पर भी नींद नहीं आती थी। अब तो बहुत ही सुखद और बेहोशी वाली नींद आती है। इतनी गहरी नींद आती है कि मुझे लगता है कि कहीं मर ना जाऊँ ! बहुत अजब हुआ है। गुरुदेव की शक्ति का तो कोई पार नहीं।''

फिर उन्होंने कहा-''मुझे पता है दिल्ली में थर्ड आई Third Eye (तीसरी आँख) खोलने की छह हजार रुपये फीस है। गुरुदेव का ज्ञान तो मुफ्त में मिल रहा है। कितनी अद्भुत बात है। मुझे जीवन की सबसे अमूल्य वस्तु मिल गई। मैं पहले से ही कई तरह का योगा करती हूँ लेकिन पहले कभी ऐसी आध्यात्मिक शक्ति का एहसास नहीं हुआ।''

इस महिला ने जोधपुर आश्रम में कई बार कॉल किया और उनको हर प्रश्न का वांछित जवाब दिया गया। एक दिन उसने वाट्सऐप पर लिखा - ''आप नाराज मत होना। मेरी एक शंका है। मैं दिल्ली में रहती हूँ और यहाँ पर बहुत सी संस्थाएँ हैं, कई गुरुओं के आश्रम हैं, जहाँ भी जाते हैं उनकी फीस

www.the-comforter.org

निश्चित होती है। आपने इस संबंध में कोई बात नहीं की, फिर आपका आश्रम कैसे चलता है?''

तब उनको समझाया गया कि यह आश्रम ईश्वरीय इच्छा से ही चलता है। यह गुरुदेव का एक मिशन है। ये धन से नहीं, धर्म से चलता है। गुरुदेव ने जो सिद्धांत लागू किये हैं, बस उस सिद्धांतों के अनुसार चलता है।

अहमदाबाद (गुजरात)
श्री पुखराज भाई
10.10.2019

(YouTube-Gurudev Siyag's Siddha Yoga-GSSY)

इन्होंने कहा-''मैं यू-ट्यूब पर ढूढ़ता रहता हूँ। एक दिन अचानक गुरुदेव के वीडियो पर नजर पड़ी और सुना तो बहुत अच्छा लगा। मुझे गुरुदेव के चरणों के दर्शन करने हैं।'' जब गुरुदेव के ब्रह्मलीन होने की बात बताई तो उन्हें गहरा आघात लगा और उन्होंने कहा कि फिर हमारा क्या होगा, फिर मुझे दीक्षा कैसे मिलेगी?''

इस संबंध में उनको पूरी जानकारी दी गई।

भीनमाल (जालोर) राज.
श्री रमेश माली
10.10.2019

इन्होंने बताया-''मैंने परमात्मा से प्रार्थना की कि मुझे गुरु से मिला दे। मैं एक दिन ऐसे ही मोबाइल पर यू-ट्यूब पर सर्च कर रहा था तो मुझे गुरुदेव सियाग जी महाराज का वीडियो मिल गया। मैं देखने लगा तो अभिभूत हो गया। मुझे बहुत अच्छा लगा और आत्मा की आवाज आई कि तुझे गुरु मिल गये। अब मुझे गुरुदेव का ध्यान करना है, मुझे क्या करना पड़ेगा?'' फिर उनको पूरा समझाया गया।

कैलीफोर्निया (अमेरिका)
श्री इन्द्रजीत सिंह-42 वर्ष
13.10.2019

(YouTube-Gurudev Siyag's Siddha Yoga-GSSY)

Avsk Jodhpur

इन्होंने कहा-''कई दिनों से यू-ट्यूब पर गुरुदेव के वीडियो देख रहा हूँ। मैं बहुत प्रभावित हूँ। मुझे गुरुदेव से नामदान लेना है। मुझे क्या करना पड़ेगा?''

फिर उनको बताया गया कि गुरुदेव की आवाज में मंत्र सुनना ही दीक्षा है।

उन्होंने कहा-''मनुष्य जीवन में आये हैं तो ईश्वर से साक्षात्कार होना ही चाहिए। मैं इसके लिए बड़ा ही जिज्ञासु था। जब से गुरुदेव के वीडियो देख रहा हूँ तब से मुझे बहुत अच्छा लगा रहा है। अब मैंने निश्चय कर लिया है कि इनको ही गुरु धारण करूँ।''

फिर इनको सिद्धयोग दर्शन की पूरी जानकारी दी गई।

इन्होंने दुबारा कॉल करके बताया -''अब मैंने गुरु महाराज का मंत्र जप और ध्यान करना शुरू कर दिया है। मेरी आत्मा में आ रहा है कि मैं अमेरिका में ज्यादा से ज्यादा लोगों को बताऊँ! अब मैं एक महिने की छुट्टी लेकर सिर्फ इस सिद्धयोग दर्शन का आनंद उठाऊँगा। पिछले 5 वर्षों से अमेरिका में रह रहा हूँ। भारत में मोगा (पंजाब) और बिजनौर (उ.प्र) से नाता है।''

सिएटल (वाशिंगटन) अमेरिका
एडवोकेट श्री हरीश भारती
-66 वर्ष, 13.10.2019

इन्होंने बताया-''यू-ट्यूब (YouTube-Gurudev Siyag's Siddha Yoga-GSSY) पर गुरुदेव का वीडियो देखकर बहुत प्रभावित हुआ। गुरुदेव की वाणी ने भीतर तक झकझोर दिया है।'' फिर उन्होंने गुरुदेव से मिलने की प्रबल इच्छा जाहिर की। जब उनको बताया गया कि वर्तमान में गुरुदेव भौतिक शरीर में नहीं है तो उन्होंने गहरा दुःख व्यक्त किया। उन्होंने बताया कि उनका मार्च 2020 में भारत आने का कार्यक्रम है और वो जोधपुर आकर गुरुदेव के दिव्य दर्शन करेंगे।

भोपाल (म.प्र)
नील कमल की बहन
13.10.2019

उन्हीं के शब्दों में-''मेरी बहन आई सी यू में भर्ती है। बचने की कोई संभावना नहीं है।

डॉक्टरों ने अपने हाथ खींच लिये हैं। मुझे यू-ट्यूब पर गुरुदेव का वीडियो मिला है। मुझे कुछ आस जगी है। मैंने परिवार के सभी लोगों से कहा है कि वे गुरुदेव से ज्यादा से ज्यादा प्रार्थना करें ताकि बहन का जीवन बच सके।''

उन्होंने वाट्सऐप पर संदेश भेजा तब उनको सिद्धयोग दर्शन की पूरी जानकारी दी गई।

अगले दिन सुबह उनका मैसेज आया कि अब उनकी बहन के स्वास्थ्य में कुछ सुधार है। तब उनको सघन मंत्र जप और नियमित ध्यान करने के लिए प्रेरित किया।

लुधियाना (पंजाब)

www.the-comforter.org

श्री रविन्द्र कुमार राणा
14.10.2019

उन्होंने कहा-

"यू-ट्यूब (YouTube-Gurudev Siyag's Siddha Yoga - GSSY) पर गुरुदेव का वीडियो देखा। बहुत प्रभावित हुआ। मंत्र जप और ध्यान कर रहा हूँ। असीम आनंद की अनुभूति हो रही है। आसपास व अन्य लोगों को यू-ट्यूब का लिंक शेयर कर रहा हूँ। बहुत से लोग आकर्षित हो रहे हैं।"

बर्धमान (प. बंगाल)
श्री रूपेश कर्मकार-37 वर्ष
14.10.2019

इन्होंने यू-ट्यूब (YouTube-Gurudev Siyag's Siddha Yoga - GSSY) पर गुरुदेव का वीडियो देखकर मंत्र जप और ध्यान शुरू किया था। कुछ समय बाद स्वतः यौगिक क्रियाएँ शुरू हो गई। उन्हें लगा कि उन्हें भ्रम हो रहा है इसलिए वास्तविकता का पता करने के लिए जोधपुर आश्रम पर कॉल किया। उन्होंने कहा कि "मेरे साथ बिना चाहे ही पूरे शरीर में हलचल हो रही है तो कोई गड़बड़ तो नहीं हो रहा है। मंत्र भी किसी और ने ही अंदर से जपना शुरू कर दिया है।" जब उनको पूरी तरह से समझाया तो उनको खुशी हुई कि उनकी आराधना में उन्नति हो रही है।

-हरदोई (उ.प्र)
श्री रामप्रकाश
14.10.2019

इन्होंने बताया-"जब से यू-ट्यूब (YouTube-Gurudev Siyag's Siddha Yoga-GSSY) पर गुरुदेव के वीडियो को देखा और सुना है, तब से भीतर से आत्मा अति हर्षित हो रही है। मैं जोधपुर आश्रम आना चाहता हूँ।"

-चण्डीगढ़ (पंजाब)
श्री दिलबाग जे ई एन
-पी. डब्ल्यू. डी विभाग
15.10.2019

इन्होंने बताया-"गुरुदेव से नामदान लेना चाहता हूँ। आज सुबह ही भगवान् की कृपा हुई और मेरे हाथ यू-ट्यूब (YouTube-Gurudev Siyag's Siddha Yoga-GSSY) पर गुरुदेव का वीडियो लग गया। देख और सुनकर रोम रोम हर्षित हो गया। मैं क्वार्टर में अकेला रहता हूँ। मुझे यह दीक्षा लेकर मंत्र जप और ध्यान करना है तो मैं क्या करूँ?"

फिर उनको सिद्धयोग दर्शन की संपूर्ण जानकारी दी गई।

मध्यप्रदेश
सुश्री सीमा-45 वर्ष
15.10.2019

पिछले 20 वर्षों से ब्रह्मकुमारी से जुड़ी हुई हैं। ईश्वरीय प्राप्ति के लिए के लिए प्रतिदिन सुबह 3.30 बजे से सुबह 6 बजे तक विभिन्न नियमों का पालन करते हुए पूजा पाठ करती हैं। पिछले पाँच दिनों से यू-ट्यूब पर गुरुदेव का वीडियो देखकर, आराधना की सरलता देखकर, बड़ी अभिभूत हुईं। एकबार ध्यान किया तो कई दृश्य दिखे। भीतर प्रकाश ही प्रकाश हो गया। इतना आनंद आया जो उन्हें पिछले 20 वर्षों में कभी नहीं आया। वह अब गुरुदेव का मंत्र जप और ध्यान करना चाहती है।

उनको सिद्धयोग दर्शन की संपूर्ण जानकारी दी गई।

-भिलाई (छत्तीसगढ़)
श्री दिलीप सरकार
15.10.2019

इन्होंने बताया-"यू-ट्यूब (YouTube-Gurudev Siyag's Siddha Yoga-GSSY) पर गुरुदेव के प्रवचनों ने मेरे मन को जबरदस्त झकझोर दिया है। मैं इनके श्री चरणों में कोटि कोटि प्रणाम करता हूँ।"

Seattle (Washington) U.S.A
Harrattan Singh-63 Year
16.10.2019

(YouTube-Gurudev Siyag's Siddha Yoga-GSSY)
Avsk Jodhpur

सन् 2007 से अमेरिका में हैं। लुधियाना (पंजाब) के निवासी हैं। यू-ट्यूब से वीडियो देखकर बहुत प्रभावित हुए हैं। स्वयं ने मंत्र जप और ध्यान किया तो सुखद अनुभूति हुई। उनको देखकर उनकी पत्नी और बेटी ने भी ध्यान करना शुरू किया है। आनंद इतना आ रहा है कि कोई शब्द नहीं है।

नासिक (महाराष्ट्र)
श्री गिरीश पाण्डेय-71 वर्ष
17-10-2019

यू-ट्यूब पर गुरुदेव के कई वीडियो सुने हैं। आत्मा को बेहद सुकून मिला है।

अहमदाबाद में एक मल्टी नेशनल कंपनी में 23 वर्षों तक मैंनेजर रहे। कई धर्मग्रन्थों का अध्ययन किया है, कई प्रकार के व्याख्यान भी दिये हैं लेकिन जो बात गुरुदेव ने कही है ऐसी बात

www.the-comforter.org

आज तक नहीं सुनी। गुरुदेव की वाणी बहुत ही अच्छी लगी है। अब जोधपुर आश्रम आकर अपनी गहन आराधना करना चाहते हैं ऐसा विचार प्रकट किया। उनको बताया गया कि यह आराधना अपने घर बैठे ही कर सकते हैं।

कोच्चि (केरल)
डॉ. नीलकण्ठ
18-10-2019

रात को 1.30 बजे यू-ट्यूब (YouTube-Gurudev Siyag's Siddha Yoga-GSSY) पर गुरुदेव का वीडियो देखा और इतने प्रभावित हुए कि मंत्र जप और ध्यान उसी समय शुरू कर दिया। आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति और कुण्डलिनी जाग्रत करने का विधान सीखना है। इसके लिए वर्षों से जिज्ञासा रही है। प्रयास भी खूब किये लेकिन कोई समर्थ सद्गुरु नहीं मिले !

फिर उनको सिद्धयोग दर्शन की पूरी जानकारी देकर समझाया गया कि आप अपने घर बैठे ही यह आराधना कर सकते हैं।

Oregon (U SA)
Bernie O'Connell
19-10-2019
-Avsk Jodhpur

Hello, my name is Bernie. I live in the state of Oregon in the USA. I have been studying yoga philosophy and practicing yoga asana and meditation since last 8 years. I recognize that something is missing in my spiritual journey. GSSY practice may be the answer.

I would like to receive the Mantra and begin the GSSY practice. My object is to further develop my own spiritual growth, and thus be more confident at improving the quality of life of those around me. Please let me know the correct way to proceed. Thank You!

A detailed reply was sent to Bernie through email about Siddha Yoga Philosophy, Shaktipat Initiation and method of meditation.

डेनमार्क देश
-एक मुस्लिम साधक
18.10.2019

पिछले छह साल से दीक्षित हैं। मंत्र जप और नियमित ध्यान कर रहे हैं। यौगिक क्रियाएँ होती हैं। गुरुदेव के प्रति श्रद्धा है।

पुरुलिया (प. बंगाल)
श्री कार्तिक महातो
18.10.2019

इन्होंने बताया-''मेरे एक दोस्त से गुरुदेव जी की जानकारी मिली। फिर यू-ट्यूब (YouTube-Gurudev Siyag's Siddha Yoga-GSSY) पर गुरुदेव जी के बहुत सारे वीडियो देखे। बहुत अच्छा लग रहा है। मैं स्वयं यह आराधना कर रहा हूँ और लोगों को भी प्रेरित कर रहा हूँ।''

शिलोंग (मेघालय)
डॉ. ए एन वर्मा
18.10.2019

बलिया (उ.प्र) के निवासी हैं। शिलोंग में स्वयं का क्लीनिक है। लम्बे अर्से से गुरु धारण करने की तमन्ना थी। फिर एक आश्रम में गये और गुरु धारण भी कर लिया लेकिन आत्मा ने स्वीकार नहीं किया। कुछ समय तक उनके बताए पथ अनुसार आराधना की। जीवन में कोई आध्यात्मिक अनुभूति न होने के कारण छोड़ दिया। फिर भारत में प्रसिद्ध कुछ गुरुओं के वीडियो देखे लेकिन तय नहीं कर पाये कि किनको गुरु धारण करें।

उन्होंने बताया-''देवसंयोग से कल ही यू-ट्यूब पर गुरुदेव का वीडियो देखा तो कुछ अलग ही एहसास हुआ। मेरा रोम रोम खिल गया। मैंने रात को एक बजे ही जोधपुर आश्रम फोन किया।''

बातचीत में डॉ. वर्मा ने कहा कि वास्तव में कलियुग में गुरुदेव कल्कि अवतार ही है। इन्होंने अपने साथी डॉक्टरों से भी सिद्धयोग दर्शन पर चर्चा की, उनसे यू-ट्यूब (YouTube-Gurudev Siyag's Siddha Yoga-GSSY) का लिंक शेयर किया।

जामनगर (गुजरात)
साधिका अनसूईया दास-54 वर्ष
20.10.2019

इन्होंने बताया-''यू-ट्यूब पर हमने गुरुदेव का वीडियो देखकर गुरु महाराज का मंत्र जप और ध्यान किया तो बहुत अच्छा लगा और एक दिन ध्यान में अथाह प्रकाश और जलती अग्नि दिखाई दी। मैं एक साधू हूँ और एक सम्प्रदाय से दीक्षित हूँ, पर गुरु महाराज का वीडियो देखा है तब से इनके प्रति बहुत भक्ति बढ़ गयी है। अब इनका मंत्र जप और ध्यान ही अच्छा लगता है। मुझे एक बार जोधपुर आश्रम आना है।''

❖❖❖

www.the-comforter.org

|| ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः ||

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

www.the-comforter.org

का

94 वाँ अवतरण दिवस

(24 नवम्बर 1926)

सद्गुरुदेव की
अहैतु की कृपा से
24 नवम्बर, 2019 को
सुबह–10:30 बजे
जोधपुर आश्रम में
श्रद्धा और समर्पण भाव
से मनाया जाएगा।
समस्त साधकगण सादर आमंत्रित हैं।

www.the-comforter.org

मुख्यालय

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर

होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राजस्थान) 342 001
सम्पर्क : 0291–2753699, 9784742595

Website : www.the-comforter.org   E-mail : avsk@the-comforter.org

श्री रामकृष्ण परमहंस छात्रावास, शिमोगा व श्री पारसनाथ शिक्षण ट्रस्ट, चित्रदुर्गा में ध्यान सिद्धयोग शिविर आयोजित। कर्नाटक (3 अक्टूबर 2019)

हिन्दू धर्म (सनातन धर्म) में वर्णित दस अवतार

(1) मत्स्य अवतार

(1) MATSYA AVTARA

(2) कच्छप अवतार

(2) KACCHAP AVTARA

(3) वाराह अवतार

(3) VARAH AVTARA

(4) नरसिंह अवतार

(4) NARSINGH AVTARA

(5) मनु अवतार

(5) MANU AVTARA

(6) वामन अवतार

(6) VAMANA AVTARA

(7) परशुराम अवतार

(7) PARSHURAM AVTARA

(8) राम अवतार

(8) RAM AVTARA

(9) कृष्ण अवतार

(9) KRISHNA AVTARA

हिन्दू अवतारों की शृंखला

अपने आप में मानों क्रम विकास का रूपक है

1. सर्वप्रथम 'मत्स्यावतार' हुआ। जिसके माध्यम से जल में जीवों का सृष्टि विकास हुआ। 2. फिर पृथ्वी पर थल व जल के स्थल-जलचर 'कच्छप' का अवतरण हुआ। 3. तृतीय अवतार 'वाराह' के साथ पृथ्वी पर पशु-पक्षियों की सृष्टि हुई। 4. 'नृसिंह' अवतार पशुओं व मनुष्यों के मध्य की स्थिति को स्पष्ट करता है। फिर 5वें 'मनु', 6वें 'वामन', 7वें 'परशुराम', 8वें 'राम' और 9वें श्री कृष्ण आदि अवतरित हुए जो निरन्तर प्राणमय राजसिक से सात्विक मानसिक, मानस और अधिमानस तक ले जाने के माध्यम बने।

(10) 'कल्कि' अवतार

(10) KALKI AVTARA

अश्विनी हॉस्पीटल, मुम्बई में प्रत्येक रविवार को आयोजित सिद्धयोग शिविर में ध्यान मग्न मरीज। (सितम्बर–अक्टूबर 2019)

बाड़मेर जिले के विभिन्न गाँवों के विद्यालयों में सिद्धयोग शिविर आयोजित। (17 अक्टूबर 2019)
(कोटड़ी, खरण्टिया, अम्बापुरा व कम्मों का बाड़ा)

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर शाखा-कोटा द्वारा कोटा में लगने वाले भारत के सुप्रसिद्ध दशहरे मेले में सिद्धयोग प्रदर्शनी का आयोजन दिनांक 8 से 24 अक्टूबर 2019 तक किया गया। पूरे मेले में गुरुदेव सियाग सिद्धयोग प्रदर्शनी का तीसरा स्थान रहा। हजारों आगंतुकों को सिद्धयोग दर्शन से रूबरू कराया गया। प्रतिदिन आगंतुक जिज्ञासुजनों ने संजीवनी मंत्र जप के साथ ध्यान कर, सिद्धयोग दर्शन का लाभ उठाया।

दशहरा मेला प्रदर्शनी में अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर शाखा-कोटा को सम्मानित करते हुए दशहरा मेला संयोजक।

गतांक से आगे...

भगवान् की अवतरण-प्रणाली

अवतार यह भी दिखाते हैं कि यह कैसे किया जा सकता है? यदि अवतार अद्भुत चमत्कारों के द्वारा ही काम करें तो इससे अवतरण का उद्देश्य पूरा नहीं हो सकता। असाधारण अथवा अद्भुत चमत्काररूप अवतार के होने का कुछ मतलब ही नहीं रहता। यह भी जरूरी नहीं है कि अवतार असाधारण शक्तियों का प्रयोग-जैसे कि ईसा के रोगियों को आराम कर देनेवाले तथाकथित चमत्कार-करें ही नहीं, क्योंकि असाधारण शक्तियों का प्रयोग मानव-प्रकृति की संभावना के बाहर नहीं है। परन्तु इस प्रकार की कोई शक्ति न हो तो भी अवतार में कोई कमी नहीं आती, न यह कोई मौलिक बात है। यदि अवतार का जीवन असाधारण आतिशबाजी का खेल हो तो इससे भी काम न चलेगा।

अवतार ऐंद्रजालिक जादूगर बनकर नहीं आते, प्रत्युत मनुष्य-जाति के भागवत नेता और भागवत मनुष्य के एक दृष्टांत बनकर आते हैं। मनुष्योचित शोक और भौतिक दुःख भी उन्हें झेलने पड़ते हैं और उनसे काम लेना पड़ता है, ताकि वे यह दिखाला सके कि किस प्रकार इस शोक और दुःख को आत्मोद्धार का साधन बनाया जा सकता है। ईसा ने दुःख उठाकर यही दिखाया। दूसरी बात उन्हें यह दिखलानी होती है कि मानव-प्रकृति में अवतरित भागवत आत्मा इस शोक और दुःख को स्वीकार करके उसी प्रकृति में उसे किस प्रकार जीत सकता है। बुद्ध ने यही करके दिखाया था। यदि कोई बुद्धिवादी ईसा के आगे चिल्लाया होता **''तुम यदि ईश्वर के बेटे हो तो उतर आओ इस सूली पर से।''** अथवा अपना पाण्डित्य दिखाकर कहता कि अवतार ईश्वर नहीं थे, क्योंकि वे मरे और वह भी बीमारी से...तो वह बेचारा जानता ही नहीं कि वह क्या बक रहा है, क्योंकि वह तो विषय की वास्तविकता से ही वंचित है।

भागवत आनन्द के अवतार से पहले शोक और दुःख को झेलनेवाले अवतार की भी आवश्यकता होती है; मनुष्य की सीमा को अपनाने की आवश्यकता होती है, ताकि यह दिखाया जा सके कि इसे किस प्रकार पार किया जा सकता है। और यह सीमा किस प्रकार या कितनी दूर तक पार की जायेगी, केवल आंतरिक रूप से पार की जायेगी या बाह्य रूप से भी, यह बात मानव-जाति के उत्कर्ष की अवस्था पर निर्भर है, यह सीमा किसी अमानव चमत्कार के द्वारा नहीं लांघी जायेगी ।

अब यह प्रश्न उपस्थित होता है और यही असल में मनुष्य की बुद्धि के लिये एकमात्र बड़ी समस्या है क्योंकि यहाँ आकर मानव-बुद्धि अपनी ही सीमा के अन्दर लुढ़कने-पुढ़कने लगती है...कि अवतार मानव-मन-बुद्धि और शरीर को ग्रहण कैसे करता है? कारण इनकी सृष्टि अकस्मात् एक साथ इसी रूप में नहीं हुई होगी, बल्कि भौतिक या आध्यात्मिक या दोनों ही प्रकार के किसी विकासक्रम से ही हुई होगी। इसमें संदेह नहीं कि अवतार का अवतरण, दिव्य जन्म की ओर, मनुष्य के आरोहण के समान ही तत्त्वतः एक आध्यात्मिक व्यापार है; जैसा कि गीता के **''आत्मानं सृजामि''** वाक्य से जान पड़ता है,--यह आत्मा का जन्म है। परन्तु फिर भी इसके साथ एक भौतिक जन्म तो लगा ही रहता है। तब यह प्रश्न उपस्थित होता है कि अवतार के मानव-मन और शरीर का कैसे निर्माण होता है। यदि हम यह मान लें कि शरीर सदा ही वंशानुक्रमिक विकास से निर्मित होता है, अचेतन प्रकृति और तदनुस्यूत प्राणशक्ति शरीर निर्माण का यह कार्य किया करती है, इसमें व्यक्तिगत अंतरात्मा के करने की कोई बात नहीं तो मामला सीधा हो जाता है।

तब यही मान लेना पड़ेगा कि किसी शुचि और महत् वंश के विकास-क्रम से ही यह अन्नमय और मनोमय शरीर भगवत्-अवतार के उपयुक्त

तैयार होता है और तब अवतरित होने वाले भगवान् उस शरीर को धारण कर लेते हैं। परन्तु गीता के इसी अवतार वाले श्लोक में पुनर्जन्म का सिद्धांत स्वयं अवतार पर भी हिम्मत के साथ घटाया गया है, और पुनर्जन्म के संबंध में सामान्य मान्यता यही है कि पुनर्जन्म ग्रहण करनेवाला जीव अपने पिछले आध्यात्मिक और मनोवैज्ञानिक विकास के अनुसार अपने मनोमय और भौतिक शरीर को निर्धारित करता या यों कहें कि तैयार करता है।

जीव स्वयं अपना शरीर निर्माण करता है, उसका शरीर उससे पूछे बिना योंही तैयार नहीं कर दिया जाता तो क्या इससे हम यह समझ लें कि सनातन या सतत् अवतार अपने अनुकूल अपना मनोमय और अन्नमय शरीर मानव-विकास की आवश्यकता और गति के अनुसार अपने आप ही निर्माण करते और इस तरह युग-युग में प्रकट हुआ करते हैं? इसी तरह के किसी एक भाव से कुछ लोग **विष्णु के दश** अवतारों की व्याख्या करते हैं।**पहले कई पशुरूप, बाद में नरसिंह-मूर्ति, तब वामन-मूर्ति, उसके बाद प्रचण्ड आसुरिक परशुराम, फिर देव-प्रकृति-मानव महत्तर राम, इसके बाद सजग आध्यात्मिक बुद्ध, और काल के हिसाब से पहले पर स्थान के हिसाब से अंतिम, पूर्ण दिव्याभावापन्न मनुष्य श्रीकृष्ण**-''क्योंकि आखिरी अवतार कल्कि केवल श्रीकृष्ण के द्वारा आरंभ किये हुए कर्म को ही संपन्न करते हैं, पहले के अवतार समस्त संभावनाओं से युक्त जिस महत् प्रयास को प्रस्तुत कर गये हैं, कल्कि उसी को शक्ति देकर सिद्ध करते हैं।''

हमारी आधुनिक मनोवृत्ति के लिए इसे स्वीकार करना कठिन है, किन्तु ऐसा मालूम होता है कि गीता की भाषा का रुख इसी ओर है। अथवा जब गीता इस समस्या का साफ तौर पर हल नहीं करती तब हम अपने किसी दूसरे तरीके से इस प्रश्न को हल कर सकते हैं और कह सकते हैं कि अवतार का शरीर तो जीव के द्वारा निर्मित होता है पर जन्म से ही भगवान् उसे धारण करते हैं, अथवा यह भी कह सकते हैं कि इस शरीर को गीतोक्त **'चत्वारो मनवः'** अर्थात् प्रत्येक मानव मन और शरीर के आध्यात्मिक पितर प्रस्तुत करते हैं। इस तरह से कहना अपना विशिष्ट स्थान है जो गीता की संपूर्ण योजना में अनुस्यूत है। गीता का ढाँचा यही है कि अवतार एक विभूति को, उस मनुष्य को जो मानवता की ऊँची अवस्था में पहुँच चुका है, दिव्य जन्म और दिव्य कर्म की ओर ले जा रहे हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि मानव जीव को अपने तक उठाने के लिये भगवान् का अवतार लेना ही मुख्य बात है--इन्हीं आन्तरिक कृष्ण, बुद्ध या ईसा से ही

कल्कि अवतार

''आखिरी अवतार कल्कि केवल श्रीकृष्ण के द्वारा आरंभ किये हुए कर्म को ही संपन्न करते हैं। पहले के अवतार समस्त संभावनाओं से युक्त जिस महत् प्रयास को प्रस्तुत कर गये हैं, ''कल्कि'' उसी को शक्ति देकर ''सिद्ध'' करते हैं।''

अवश्य ही गूढ़ रहस्यमय क्षेत्र की गहराई में प्रवेश करना है जिसकी बातें आधुनिक बुद्धिवादी लोग अभी तो सुनना ही नहीं चाहते; परन्तु जब हमने अवतार का होना मान लिया, तब रहस्यमय क्षेत्र में तो प्रविष्ट हो ही गये और जब प्रविष्ट हो गये तो एक-एक कदम मजबूती से रखते हुए बढ़े चलना ही उत्तम है।

ऐसा है गीता का अवतार-विषयक सिद्धांत। भगवान् की अवतरण प्रणाली का यहाँ जो विस्तार किया गया और इसी तरह पहले के अध्याय में अवतार की संभावना के विषय में जो आलोचना की गयी, इसका कारण यह है कि इस प्रश्न को इसके सभी पहलुओं से देखना और मनुष्य की तर्कबुद्धि में इस बारे में जो कठिनाइयाँ खड़ी हो सकती हैं, उनका सामना करना आवश्यक था।

यह सही है कि भौतिक रूप में ईश्वर के अवतार का गीता में विशेष विस्तार नहीं है, पर गीता की शिक्षा का जो क्रम है उसकी श्रृंखला में इसका असली मतलब है।

पर जिस प्रकार आन्तरिक विकास के लिए बाह्य जीवन भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण साधन है, वैसे ही बाह्य अवतार भी इस महान् आध्यात्मिक अभिव्यक्ति के लिए किसी प्रकार कम महत्त्व की वस्तु नहीं है। मानसिक और शारीरिक प्रतीक की परिपूर्णता आंतर सद्वस्तु के विकास में सहायक होती है; फिर यही आंतरिक सद्वस्तु और भी अधिक शक्ति के साथ जीवन के द्वारा अधिक उत्कृष्ट रूप में अपने आपको प्रकट करती है। मानव-जाति में भागवत अभिव्यक्ति ने आध्यात्मिक सद्वस्तु और मानसिक तथा भौतिक अभिव्यक्ति के बीच, परस्पर सतत् आदान प्रदान के द्वारा संगोपन और प्रकटन के चक्रों में गति करना स्वीकार किया है।

संदर्भ-श्री अरविन्द रचित **'गीता प्रबंध'** पुस्तक से
समाप्त

गतांक से आगे...

सद्गुरुदेव का प्रवचन

मनुष्य जीवन का वास्तविक स्वरूप

इस वक्त, इस तरह आप जो आराधना करोगे, उससे आपका माया का आवरण क्षीण हो जाएगा। आप प्रकृति के रहस्य को खुली आँखों से देख सकोगे। फिर उस मौत से डरोगे नहीं, बेसब्री से उसका इंतजार करोगे। **कबीर बेचारे बड़े रहस्य वादी संत थे, गुरु नहीं थे** इसलिए उनमें जो परिवर्तन आया वह तो आ गया, मगर वह किसी दूसरे में परिवर्तन नहीं कर सके। उन्होंने जो वाणियों में गाया है, स्पष्ट शब्दों में बोला है। एक वाणी में गाया है-

'जल बिच कुम्भ, कुम्भ बिच जल है, बाहर भीतर पानी।

विघटा कुम्भ, जल जल ही समाना, यह गति विरले ने जानी।।'

मतलब घड़ा पानी से भरा हुआ है और तालाब में पानी के अन्दर रखा हुआ है। जल बिच कुम्भ, कुम्भ बिच जल है, बाहर भीतर पानी, विघटा कुम्भ, जल जल ही समाना, यह गति विरले ने जानी। वह कहते हैं पानी से भरा हुआ घड़ा, तालाब के अन्दर रखा है। घड़े के अंदर भी पानी है और बाहर भी पानी है। अगर घड़ा गल जाए तो बाहर वाले पानी व अन्दर वाले पानी में भेद कर सकोगे क्या? वह एक हो गया तो भइया यह शरीर रूपी घड़ा गल जाएगा, आप अपने असली फॉर्म(स्वरूप)में बदल जाओगे यह कोई आश्चर्य नहीं है, यह कोई अचम्भा नहीं है। मनुष्य अपने असली फॉर्म में बदल जाएगा। महर्षि अरविन्द की भविष्य वाणी है--"**आगामी मानव जाति दिव्य शरीर धारण करेगी।**" यह फिजिकल बॉडी डिवाइन रूप में बदल जाएगी। यह साइंस वाले बड़े आश्चर्य कर रहे हैं-यह क्या कह रहा है? तो ये मनुष्य जाति में होने वाला ड्यू विकास है, आश्चर्य नहीं।

"**देखिए** ! ऋग्वेद जब मनुष्य शरीर की रचना की बात करता है तो कहता कि सात प्रकार के तत्त्वों से इस मनुष्य शरीर का संघटन हुआ है-उसमें आत्मा अन्तर्निहीत है। फिर जब वह अलग-अलग तत्त्व की बात करता है, सेल्स की बात कहता है तो मैटर (ठोस पदार्थ) से शुरू करता है वह अन्न से बनने वाले कोश-**अन्नमय कोश, प्राणमय कोश, मनोमय कोश और विज्ञानमय कोश** फिर **आनन्दमय कोश, चित्मय कोश और सत्मय कोश** तो इस प्रकार सात कोशों में से चार कोश खूब चेतन हो गए अन्न, प्राण, मन और विज्ञान। विज्ञान ने तो 20वीं सदी में खूब तरक्की कर ली।

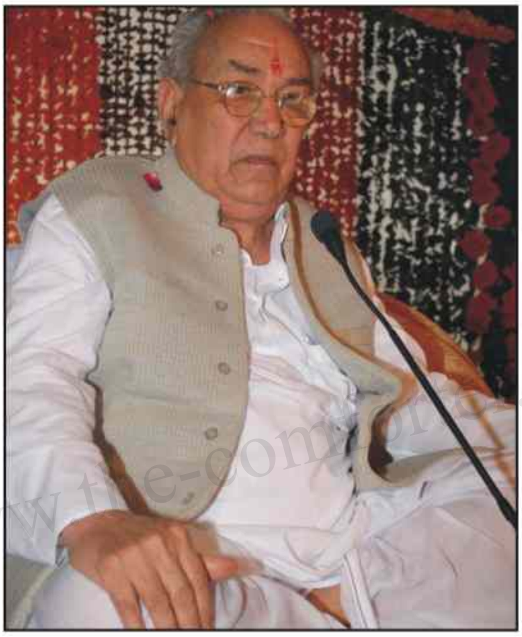

अब विज्ञान एक जगह आकर स्थिर हो गया, इससे इनकी समस्याओं का समाधान नहीं हो पा रहा है तो साइंटिस्टों से मिलने निकला हूँ कि भईया तुम्हारी समस्याओं का समाधान तब तक नहीं होगा, जब तक बाकी तीनों कोश चेतन नहीं हो जाते।

जब चार कोश चेतन हो गए तो बाकी तीन कोश चेतन होने का भी कोई तरीका है, पर यह बात केवल भारत जानता है।

भारत का वेदान्ती जानता है, संसार का कोई धर्म, कोई दर्शन नहीं जानता है। इस आराधना से पहले-पहले आपका आनन्दमय कोश चेतन हो जाएगा, फिर चित् में पहुँच जाओगे, फिर सत् में पहुँच जाओगे तो इस प्रकार सातों कोश चेतन हो जाएंगे। आप अपने असली रूप में बदल जाओगे इसमें कोई जादू नहीं, कोई करिश्मा नहीं, यह आपका क्रियात्मक विकास है। हर जाति के, हर धर्म के लोगों में आ रहा है।

-समर्थ सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग

क्रमशः अगले अंक में...

पूरे विश्व में सनातन ज्योति बिखेरने के लिए ही भारत उठ रहा है

भारत के महान् जननायक, राजनीतिज्ञ, कवि और योगी महर्षि श्री अरविन्द घोष ने अलीपुर जेल से छूटने के बाद सन् 1909 में पश्चिम बंगाल के उत्तरपाड़ा नामक स्थान पर अपना पहला भाषण दिया था। जिसमें उन्होंने अपने जेल जीवन का अनुभव सुनाया था और जेल जीवन के एकांतवास में भगवान् श्री कृष्ण से हुए साक्षात्कार के विषय में विस्तार से बताया था। भगवान् ने कहा था कि सनातन धर्म की ज्योति बिखेरने के लिए ही वह भारत देश को विश्व में उठा रहे हैं। हिन्दू धर्म क्या है और पूरी दुनिया में सनातन धर्म कैसे कार्य करेगा आदि विषयों पर विस्तार से समझाया गया है।

जब मुझे गिरफ्तार करके जल्दी-जल्दी लाल बाजार की हाजत में पहुँचाया गया तो मेरी श्रद्धा क्षणभर के लिए डिग गयी थी, क्योंकि उस समय मैं भगवान् की इच्छा के मर्म को नहीं जान पाया था। इसलिए मैं क्षणभर के लिए विचलित हो गया और अपने हृदय में भगवान् को पुकारकर कहने लगा "यह क्या हुआ?

मेरा यह विश्वास था कि मुझे अपने देशवासियों के लिए विशेष काम करना है। और जब तक वह काम पूरा नहीं हो जाता तब तक तुम मेरी रक्षा करोगे। तब फिर मैं यहाँ क्यों हूँ और वह भी इस प्रकार के अभियोग में?" **एक दिन बीता, दो दिन बीते, तीन दिन बीत गये,** तब मेरे अंदर से एक आवाज आयी, "ठहरो और देखो कि क्या होता है।" तब मैं शांत हो गया और प्रतीक्षा करने लगा।

मैं लालबाजार थाने से अलीपुर जेल में ले जाया गया और वहाँ मुझे एक महीने के लिए मनुष्यों से दूर एक निर्जन कालकोठरी में रखा गया। वहाँ मैं अपने अंदर विद्यमान भगवान् की वाणी सुनने के लिए, यह जानने के लिए कि वे मुझसे क्या कहना चाहते हैं और यह सीखने के लिए कि मुझे क्या करना होगा, रात-दिन प्रतीक्षा करने लगा। इस **एकांतवास** में मुझे सबसे पहली अनुभूति हुई, पहली शिक्षा मिली। **उस समय मुझे याद आया कि गिरफ्तारी से एक महीना या उससे भी कुछ अधिक समय पहले मुझे यह आदेश मिला था कि मैं अपने सारे कर्म छोड़कर एकांत में चला जाऊँ और अपने अंदर खोज करूँ ताकि भगवान् के साथ अधिक संपर्क में आ सकूँ। मैं दुर्बल था और उस आदेश को स्वीकार न कर सका।**

मुझे अपना कार्य बहुत प्रिय था और हृदय में इस बात का अभिमान था कि यदि मैं न रहूँ तो इस काम को धक्का पहुँचेगा, इतना ही नहीं शायद असफल और बंद भी हो जायेगा; इसलिए मुझे काम नहीं छोड़ना चाहिए। ऐसा बोध हुआ कि वे मुझसे फिर बोले और उन्होंने कहा कि, "जिन बंधनों को तोड़ने की शक्ति तुममें नहीं थी, उन्हें तुम्हारे लिए मैंने तोड़ दिया है क्योंकि मेरी यह इच्छा नहीं है और न थी ही कि वे कार्य जारी रहें।

तुम्हारे करने के लिए मैंने दूसरा काम चुना है और उसी के लिए मैं तुम्हें यहाँ लाया हूँ ताकि मैं तुम्हें वह बात सिखा दूँ जिसे तुम स्वयं नहीं सीख सके और तुम्हें अपने काम के लिए तैयार कर लूँ।" इसके बाद भगवान् ने मेरे हाथों में गीता रख दी। मेरे अंदर उनकी

भारत का उत्थान

"मैं इस देश और उसके उत्थान में हूँ, मैं वासुदेव हूँ, मैं नारायण हूँ। जो कुछ मेरी इच्छा होगी वही होगा, दूसरों की इच्छा से नहीं। मैं जिस चीज को लाना चाहता हूँ, उसे कोई मानव शक्ति रोक नहीं सकती।"

www.the-comforter.org

शक्ति प्रवेश कर गयी और मैं गीता की साधना करने में समर्थ हुआ। मुझे केवल बुद्धि द्वारा ही नहीं, बल्कि अनुभूति द्वारा भी जानना था कि श्री कृष्ण की अर्जुन से क्या माँग थी और वे उन लोगों से क्या माँगते हैं, जो उनका कार्य करने की इच्छा रखते हैं, अर्थात् घृणा और कामना-वासना से मुक्त होना होगा, फल की इच्छा न रखकर भगवान् के लिए कर्म करना होगा, अपनी इच्छा का त्याग करना होगा, और निश्चेष्ट तथा सच्चा यंत्र बनकर भगवान् के हाथों में रहना होगा, ऊँच और नीच, मित्र और शत्रु, सफलता और विफलता के प्रति समदृष्टि रखनी होगी और यह सब होते हुए भी उनके कार्य में कोई अवहेलना न आने पाए।

मैंने यह जाना कि हिंदू धर्म का मतलब क्या है? बहुधा हम हिंदू धर्म, सनातन धर्म की बातें करते हैं, किंतु वास्तव में हममें से कम ही लोग यह जानते हैं कि यह धर्म क्या है? दूसरे धर्म मुख्य रूप से विश्वास, व्रत, दीक्षा और मान्यता को महत्त्व देते हैं, **किंतु सनातन धर्म तो स्वयं जीवन है,** यह इतनी विश्वास करने की चीज नहीं है, जितनी जीवन में उतारने की चीज हैं। **यही वह धर्म है जिसे मानव जाति के कल्याण के लिए प्राचीन काल से इस प्रायद्वीप के एकांतवास में संजोया जाता रहा है। यही धर्म देने के लिए भारत उठ रहा हैं।** भारतवर्ष, दूसरे देशों की तरह, अपने लिए ही या मजबूत होकर दूसरों को कुचलने के लिये नहीं उठ रहा। वह उठ रहा है, **सारे संसार पर वह सनातन ज्योति बिखरने के लिये, जो उसे सौंपी गयी है।** भारत का जीवन सदा ही मानवजाति के लिये रहा है, उसे अपने लिये नहीं बल्कि मानव जाति के लिये महान् होना है।

अतः भगवान् ने मुझे दूसरी वस्तु दिखायी-**उन्होंने मुझे हिन्दू धर्म के मूल सत्य का साक्षात्कार करा**

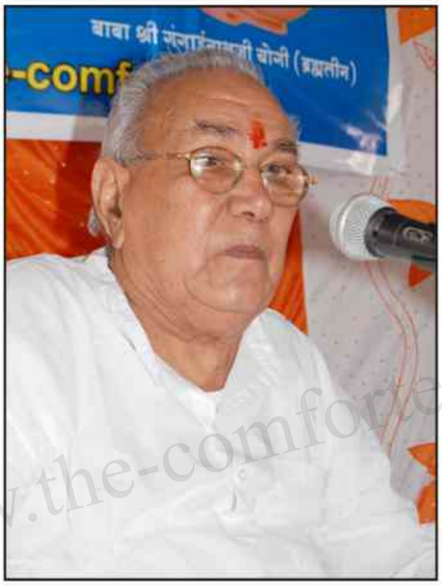

दिया। उन्होंने मेरे जेलरों के दिल को मेरी ओर मोड़ दिया, उन्होंने जेल के प्रधान अंग्रेज अधिकारी से कहा कि "ये कालकोठरी में बहुत कष्ट पा रहे हैं; इन्हें कम-से- कम सुबह-शाम आधा-आधा घंटा कोठरी के बाहर टहलने की अनुमति दे दी जाये।" यह अनुमति मिल गयी और जब मैं टहल रहा था तो भगवान् की शक्ति ने फिर मेरे अंदर प्रवेश किया।

मैंने उस जेल की ओर दृष्टि डाली जो मुझे और लोगों से अलग किये हुए थी। मैंने देखा कि अब मैं उसकी ऊँची दीवारों के अंदर बंदी नहीं हूँ; **मुझे घेरे हुए थे-वासुदेव।** मैं अपनी कालकोठरी के सामने के पेड़ की शाखाओं के नीचे टहल रहा था, परन्तु वहाँ पेड़ न था, **मुझे प्रतीत हुआ कि वे वासुदेव हैं;** मैंने देखा कि स्वयं श्रीकृष्ण खड़े हैं; और मेरे ऊपर **छाया** किये हुए हैं। मैंने अपनी कालकोठरी के सींखचों की ओर देखा, उस जाली की ओर देखा, जो दरवाजे का काम कर रही थी, वहाँ भी वासुदेव दिखायी दिये। **स्वयं नारायण संतरी बनकर पहरा दे रहे थे।** जब मैं उन मोटे कंबलों पर लेटा जो मुझे पलंग की जगह मिले थे तो मैंने यह अनुभव किया कि मेरे सखा और प्रेमी श्री कृष्ण मुझे अपनी बाहुओं में लिये हुए हैं।

मुझे उन्होंने जो गहरी दृष्टि दी थी उसका यह पहला प्रयोग था। मैंने जेल के कैदियों-चोरों, हत्यारों और बदमाशो-को देखा और **मुझे वासुदेव दिखायी पड़े,** उन अंधेरे में पड़ी आत्माओं और बुरी तरह काम में लाये गये शरीरों में **मुझे नारायण मिले।** उन चोरों और डाकुओं में बहुत से ऐसे थे जिन्होंने अपनी सहानुभूति और दया के द्वारा मुझे लज्जित कर दिया, इन विपरीत परिस्थितियों में मानवता विजयी हुई थी।

इनमें से एक आदमी को मैंने विशेष रूप से देखा जो मुझे एक संत मालूम हुआ। वह हमारे देश का एक किसान था, जो लिखना-पढ़ना नहीं जानता था, जिसे तथाकथित डकैती के अभियोग में दस वर्ष का कठोर दंड मिला था। यह उनमें से एक व्यक्ति था जिन्हे हम वर्ग के मिथ्याभिमान में आकर "छोटो लोक" (नीच) कहा करते हैं। फिर एक बार भगवान् मुझसे बोले, उन्होंने कहा "अपना कुछ

थोड़ा-सा काम करने के लिये मैंने तुम्हें जिनके बीच भेजा है, उन लोगों को देखो। जिस जाति को मैं ऊपर उठा रहा हूँ उसका स्वरूप यही है और इसी कारण मैं उसे ऊपर उठा रहा हूँ।''

जब छोटी अदालत में मुकदमा शुरू हुआ और हम लोग मजिस्ट्रेट के सामने खड़े किये गये तो वहाँ भी मेरी अंतर्दृष्टि मेरे साथ थी। **भगवान् ने मुझसे कहा,''जब तुम जेल में डाले गये थे तो क्या तुम्हारा हृदय हताश नहीं हुआ था, क्या तुमने मुझे पुकार कर यह नहीं कहा था-कहाँ? तुम्हारी रक्षा कहाँ है?** लो, अब मजिस्ट्रेट की ओर देखो, सरकारी वकील की ओर देखो।'' मैंने देखा कि अदालत की कुर्सी पर मजिस्ट्रेट नहीं, **स्वयं वासुदेव नारायण बैठे थे।** अब मैंने सरकारी वकील की ओर देखा, पर वहाँ कोई सरकारी वकील नहीं दिखायी दिया, **वहाँ तो श्रीकृष्ण बैठे मुस्करा रहे थे, मेरे सखा, मेरे प्रेमी।**

उन्होंने कहा,''अब डरते हो? मैं सभी मनुष्यों में विद्यमान हूँ और उनके सभी कर्मों और शब्दों पर राज करता हूँ। मेरा संरक्षण अब भी तुम्हारे साथ है, और तुम्हें डरना नहीं चाहिये। तुम्हारे विरूद्ध जो यह मुकदमा चलाया गया है, उसे मेरे हाथों मे सौंप दो। यह तुम्हारे लिये नहीं है। मैं तुम्हें यहाँ मुकदमे के लिए नहीं बल्कि किसी और काम के लिये लाया हूँ। **यह तो मेरे काम का एक साधन मात्र है, इससे अधिक कुछ नहीं।''**

इसके बाद जब सेशन जज की अदालत में विचार आरंभ हुआ तो मैं अपने वकील के लिये ऐसी बहुत सी हिदायतें लिखने लगा कि गवाही में मेरे विरुद्ध कही गयी बातों में से कौन सी बातें गलत हैं और किन किन पर गवाहों से जिरह की जा सकती है। तब एक ऐसी घटना घटी जिसकी मैं आशा नहीं करता था। मेरे मुकदमे की पैरवी के लिये जो प्रबंध किया गया था, वह एकाएक बदल गया और मेरी सफाई के लिये एक दूसरे ही वकील खड़े हुए। वे अप्रत्याशित रूप से आ गये, वे मेरे

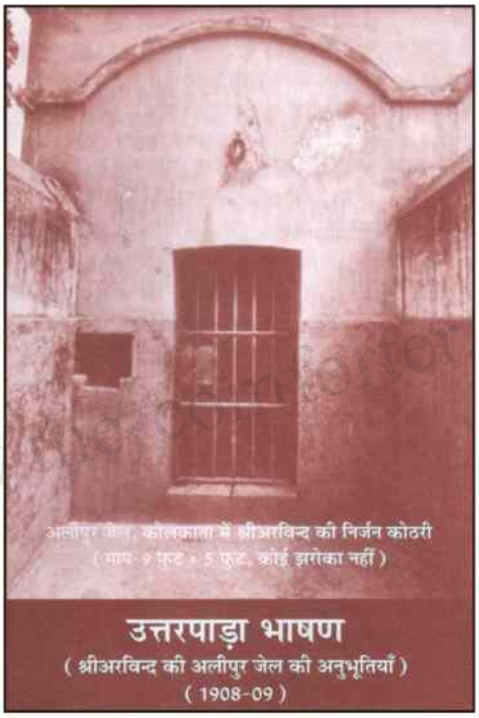

एक मित्र थे किंतु मैं नहीं जानता था कि वे आयेंगे। आप सभी ने उनका नाम सुना हैं, जिन्होंने मन से सभी विचार निकाल बाहर किये और इस मुकदमे के सिवाय सारी वकालत बंद कर दी,जिन्होंने महीनों लगातार आधी आधी रात तक जगकर मुझे बचाने के लिये अपना स्वास्थ्य बिगाड़ लिया-वे हैं **श्री चितरंजन दास देशबन्धु।**

जब मैंने उन्हें देखा तो मुझे संतोष हुआ फिर भी मैं समझता था कि हिदायतें लिखनी जरूरी हैं। इसके बाद यह विचार भी हटा दिया गया और मेरे अंदर से आवाज आयी, ''यही वह आदमी है जो तुम्हारे पैरों के चारों ओर फैले जाल से तुम्हें बाहर निकालेगा। तुम इन कागजों को अलग धर दो। इन्हें तुम हिदायतें नहीं दोगे, मैं दूँगा।'' उस समय से इस मुकदमे के संबध में, मैंने अपनी ओर से अपने वकील से एक शब्द भी नहीं कहा, कोई हिदायत नहीं दी और यदि कभी मुझसे कोई सवाल पूछा गया तो मैंने सदा यही देखा कि मेरे उत्तर से मुकद्दमे को कोई मदद नहीं मिली। मैंने मुकदमा उन्हें सौंप दिया और उन्होंने पूरी तरह उसे अपने हाथों में ले लिया, और उसका परिणाम आप जानते ही हैं। मैं सदा यह जानता था कि मेरे संबंध में भगवान् की क्या इच्छा है, क्योंकि मुझे बार बार यह वाणी सुनायी पड़ती थी, मेरे अंदर से सदा यह आवाज आया करती थी, **''मैं रास्ता दिखा रहा हूँ, इसलिए डरो मत।** मैं तुम्हें जिस काम के लिये जेल में लाया हूँ, अपने उस काम की ओर मुड़ो और जब तुम जेल से बाहर निकलो तो यह याद रखना-**कभी डरना मत, कभी हिचकिचाना मत। याद रखो, यह सब मैं कर रहा हूँ और कोई नहीं।** अतः चाहे जितने बादल घिरे, चाहे जितने खतरे और दुःख कष्ट आये, कठिनाइयाँ हो, चाहे जितनी असंभवताएँ आयें, कुछ भी असभंव नहीं है, कुछ भी कठिन नहीं है।

मैं इस देश और उसके उत्थान में हूँ, मैं वासुदेव हूँ, मैं नारायण हूँ। जो कुछ मेरी इच्छा होगी वही होगा, दूसरों की इच्छा से नहीं। मैं जिस चीज को लाना चाहता हूँ, उसे कोई मानव शक्ति रोक नहीं सकती।''

❖❖❖

सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से...

कुण्डलिनी जागरण

भारतीय ऋषियों ने सृष्टि की उत्पत्ति के सम्बन्ध में अन्तर मुखी होकर खोज की तो पाया कि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड मनुष्य शरीर में है। जब ऋषियों ने और गहन शोध किया तो पाया कि इस जगत का रचने वाला सहस्रार में स्थित है और उसकी शक्ति मूलाधार में। इन दोनों के कारण ही संसार की रचना की गई। उस परम पुरुष की शक्ति उसके आदेश से नीचे उतरती गई और अलग-अलग लोकों की रचना करके मूलाधार में स्थित हो गई। इसके चेतन होकर ऊर्ध्व गमन करते हुए सहस्रार में पहुँचने का नाम ही मोक्ष है।

गुरु शिष्य परम्परा में जो शक्तिपात दीक्षा का विधान है, उसके अनुसार गुरु अपनी शक्ति से कुण्डलिनि को चेतन करके ऊपर को चलाते हैं। गुरु का इस शक्ति पर पूर्ण प्रभुत्व होता है, इसलिए यह उस गुरु के आदेश के अनुसार चलती है। क्यों कि यह सहस्रार में स्थित परम सत्ता की परा शक्ति है, अतः यह मात्र उसी का आदेश मानती है। इसका स्पष्ट अर्थ है कि जिस व्यक्ति को सहस्रार में स्थित उस तत्व की सिद्धि हो जाती है, वही इसका संचालन करने का अधिकारी है। यह शक्ति विश्व में एक समय में मात्र एक ही व्यक्ति के माध्यम से कार्य करती है। अतः संसार में एक समय में यह कार्य सिर्फ एक ही व्यक्ति द्वारा सम्पन्न हो सकता है। क्यों कि यह सार्वभौम सत्ता है, इस लिए वह व्यक्ति विश्व भर में अभूतपूर्व क्रान्तिकारी परिवर्तन करने की सामर्थ्य रखता है।

यह भारतीय दर्शन की विश्व को अभूतपूर्व एवं अद्वितीय देन है। मैं इसी दिव्य ज्ञान का प्रसार-प्रचार, मेरे संत सद्गुरु बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी (ब्रह्मलीन) के आदेशानुसार, करने विश्व में निकला हूँ।

मैं इस सम्बन्ध में पश्चिमी देशों के दार्शनिकों को यह बात विशेष तौर से कहना चाहूँगा कि आज तक इस शक्ति का ज्ञान उन्होंने पाया वह अपूर्ण है। पश्चिम के लोग सर्पेन्ट पावर - सर्पेन्ट पावर की संज्ञा देकर जो व्याख्या कर रहे वह पूर्णरूप से गलत है। इसके चेतन होने से कोई भी हानि नहीं होती है, क्यों कि यह मातृ शक्ति है। माँ भला संतान का कभी बुरा सोच सकती है। मैं इस शक्ति का परिचय देकर इसे जागृत करके अनुभूति करवाने ही विश्व में निकला हूँ।

सद्गुरु की प्रसन्नता

जीवन का सर्वोत्तम विकास

पूज्य सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

गुरु की सर्वोत्तम व्याख्या है-जो **'गोविन्द से मिलाय'** इसीलिए ईश्वर की स्थिति और प्राप्ति के संबंध में कहा गया है-

"जो सभी मानव शरीरों में व्याप्त, हृदय में प्रतिक्षण पूर्णरूप से निवास करते रहने पर भी, जो **'श्रीगुरुकृपाहीन'** को **गोचर** *(Transit, पारगमन)* न होकर गुप्तवास कर रहा है, वही वेदान्त का अन्तिम लक्ष्य **सच्चिदानंद** है।"

मंत्र का रहस्य जब तक समझ में नहीं आता, तब तक साधक उससे कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकता। मंत्र का रहस्य कैसे जाना जा सकता है, इस संबंध में मालिनीविजयतंत्र में कहा गया है-

शिष्येणापि तदा ग्राह्या यदा सन्तोषितो गुरुः।
शरीर द्रव्य विज्ञान शुद्धि कर्म गुणादिभिः।।
बोधिता तु यदा तेन गुरुणा दृष्ट चेतसा।
तदा सिद्धिप्रदा ज्ञेया
नान्यथा वीरबन्दिते।।3:49,48।।

मंत्र का रहस्य तभी समझ में आ सकता है, जब गुरु शिष्य के सद्गुणों से संतुष्ट हो जाते हैं। हे देवी ! जब गुरु हृदय से प्रसन्न होते हैं, तभी मंत्र का रहस्य खोलते हैं, और मंत्र मुक्ति देता है, **'गुरु संतोष मात्रेण अन्यथा नहीं।'**

www.the-comforter.org

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

मुख्यालयः- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.)-342003
संपर्क-0291-2753699, मो. 09784742595, YouTube:Gurudev Siyag's Siddha Yoga - GSSY
Website:www.the-comforter.org, Email-avsk@the-comforter.org

गतांक से आगे...

योग के आधार

महर्षि श्री अरविन्द

कठिनाई में

श्रद्धा, प्रसन्नता और अंतिम विजय में विश्वास...ये सब चीजें ही सहायता करती हैं, ये प्रगति को अधिक सहज और तीव्र बनाती हैं।

जो अच्छी अनुभूतियाँ तुम्हें प्राप्त होती हैं उनका अधिक-से-अधिक लाभ उठाओ; वैसी एक भी अनुभूति इन पतनों और विफलताओं से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है। पर जब ऐसी अनुभूति बंद हो जाये तो उसके लिये अनुताप मत करो या उसके कारण निरुत्साहित मत हो जाओ, बल्कि भीतर में शांत बने रहो और यह अभीप्सा करो कि वह फिर से एक अधिक स्थायी रूप ग्रहण करके आये तथा और भी अधिक गंभीर और पूर्ण अनुभूति की ओर ले जाये।

सर्वदा अभीप्सा करो, पर करो अधिकाधिक अचंचल रहते हुए तथा भगवान् की ओर अपने-आपको सरल और संपूर्ण रूप में उद्‌घाटित करते हुए।

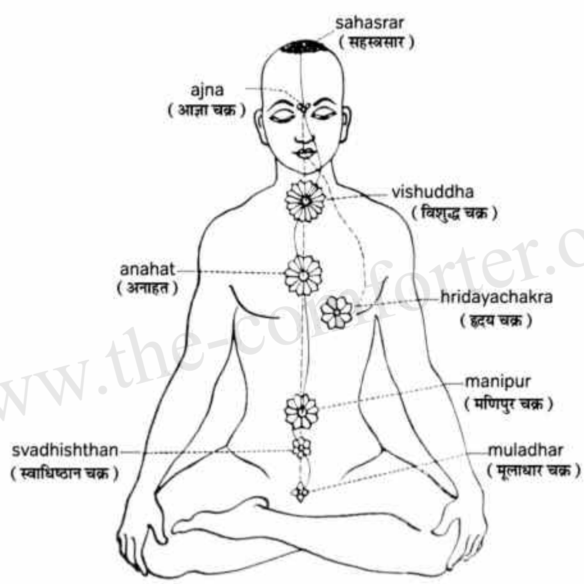

Subtle Centres of Consciousness
(चेतना के सूक्ष्म केन्द्र)

अधिकांश मनुष्यों का निम्नतर प्राण भयंकर दोषों तथा ऐसी कुछ वृत्तियों से भरा रहता है जो विरोधी शक्तियों को प्रत्युत्तर देती हैं। अंतरात्मा को निरंतर उद्‌घाटित रखने, इन प्रभावों का अनवरत त्याग करते रहने, विरोधी शक्तियों के सभी सुझावों से अपने-आपको अलग रखने से तथा भीतर की शक्ति से स्थिरता, शांति, ज्योति और पवित्रता को अपने अंदर प्रवाहित होने देने से अंत में हमारा आधार विरोधी शक्तियों के घेरे से मुक्त हो जायेगा। **जिस बात की आवश्यकता है, वह है अचंचल बने रहना, अधिकाधिक अचंचल बने रहना,** इन सब प्रभावों को इस प्रकार देखना कि ये तुम्हारे कुछ नहीं हैं, ये कहीं बाहर से आकर घुस पड़े हैं, इनसे अपने-आपको अलग करना, इन्हें अस्वीकार करना तथा भागवत शक्ति पर दृढ़ विश्वास बनाये रखना। अगर तुम्हारा हृत्पुरुष भगवान् को पाने की इच्छा करता हो, तुम्हारा मन सच्चा हो और निम्न प्रकृति तथा समस्त विरोधी शक्तियों से मुक्त होना चाहते हो और अगर तुम अपने हृदय में **ईश्वरीय शक्ति का आह्वान कर सको तथा अपनी व्यक्तिगत शक्ति की अपेक्षा उसी पर अधिक निर्भर कर सको तो अंत में विरोधी शक्तियों का यह घेरा नष्ट-भ्रष्ट हो जायेगा और उसका स्थान शांति और सामर्थ्य ग्रहण कर लेंगे।**

निम्न प्रकृति अज्ञानमयी और अदिव्य है, यह स्वयं ज्योति और सत्य का विरोध नहीं करती, बस यह उनकी ओर खुली हुई नहीं है। परंतु जो विरोधिनी शक्तियाँ हैं, वे केवल अदिव्य ही नहीं, वरन् दिव्यता की शत्रु हैं; वे निम्न प्रकृति का उपयोग करती हैं, उसे कुमार्ग में ले जाती हैं, उसे विकृत वृत्तियों से भर देती हैं तथा इस उपाय के द्वारा वे मनुष्य को प्रभावित करती और यहाँ तक कि उसके अंदर प्रवेश करने और उसे अपने अधिकार में कर लेने की या कम-से-कम उसे पूरी तरह अपने वश में कर लेने की चेष्टा करती हैं। सब प्रकार की अतिरंजित आत्मनिंदा से तथा पाप, कठिनाई या विफलता का बोध होने पर अवसन्न होने की आदत से अपने-आपको मुक्त करो। ये सब भाव वास्तव में तनिक भी सहायता नहीं करते, बल्कि उल्टे ये एक बहुत बड़ी बाधा हैं और हमारी उन्नति को रोकते हैं।

क्रमशः अगले अंक में...

गतांक से आगे...

योगियों की आत्मकथा

उस कक्ष में चारों ओर रखे अथक प्रतिभा के मुखार प्रतीक, असंख्य आविष्कारों पर मैंने दृष्टि दौड़ायी।

''सर यह दुःख की बात है कि आपके अद्भुत यंत्रों का पूर्ण लाभ उठाकर बड़े पैमाने पर कृषि-विकास को गति नहीं दी जा रही है। इनमें से कुछ यंत्रों को त्वरित प्रयोगों में प्रयुक्त करके खाद के विभिन्न प्रकारों का पौधों पर क्या प्रभाव पड़ता है, यह देखना क्या सहज सम्भव नहीं हो सकता?''

''तुम ठीक कह रहे हो। भावी पीढ़ियाँ बोस यंत्रों को अगणित प्रकारों से प्रयोग में लायेंगी। वैज्ञानिक को उसके परिश्रम का तत्काल पुरस्कार कदाचित ही मिलता है; सृजनात्मक सेवा का आनन्द ही उसके लिये पर्याप्त है।''

उस अदम्य ऋषि के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता वयक्त कर मैंने उनसे विदा ली। मैंने सोचा, ''उनकी अद्भुत प्रतिभा की विस्मयकारी उर्वरता क्या कभी निःशेष हो सकती है?''

बढ़ते वर्षों के साथ उनकी प्रतिभा में कोई कमी नहीं आई। ''रेजोनेन्ट कार्डियोग्राफ'' नामक एक जटिल यंत्र का आविष्कार करने के बाद बोस महाशय असंख्य भारतीय पेड़-पौधों के विस्तृत अनुसंधान में लग गये। किसी को कल्पना भी नहीं थी ऐसी-ऐसी उपयुक्त औषधियों की एक विराट भेषज तालिका तैयार हो गयी। कार्डियोग्राफ ऐसी अचूक सटीकता के साथ तैयार किया गया है कि उससे एक सैकण्ड का शतांश तक रेखाचित्र में अंकित हो जाता है। पेड़-पौधे, प्राणी एवं मानव-शरीर की संरचना के सूक्ष्मातिसूक्ष्म स्पन्दन भी यह कार्डियोग्राफ अंकित कर लेता है। उस महान् वनस्पति-शास्त्रज्ञ ने भविष्यवाणी की कि वैद्यकीय अनुसंधान के लिये प्राणियों के अंगच्छेदन की आवश्यकता नहीं रहेगी; कार्डियोग्राफ के प्रयोग से पेड़-पौधों के अंगच्छेदन से ही काम चल जायेगा।

''किसी औषधि के पौधे और प्राणी पर एक साथ किये गये प्रयोग के परिणामों के अंकन से साफ पता चलता है कि उन दोनों पर उस औषधि के प्रभाव में आश्चर्यजनक समानता है,'' उन्होंने स्पष्ट किया। ''मनुष्य में जो कुछ भी हैं उस सब का पूर्वाभास पेड़-पौधों में विद्यमान है। वनस्पति जगत् पर प्रयोग प्राणियों और मानवों की यातना को कम करने में योगदान देंगे।

कई वर्षों के बाद बोस महाशय के पथप्रदर्शक वनस्पति आविष्कारों की अन्य वैज्ञानिकों द्वारा पुष्टि की गयी। कोलम्बिया युनिवर्सिटी में 1938 में किये शोध कार्य की वार्ता ''द न्यूयॉर्क टाइम्स'' में निम्नलिखित रूप में प्रकाशित हुई थी:

गत कतिपय वर्षों में यह निर्धारित हो चुका है कि जब मस्तिष्क और शरीर के अन्य हिस्सों के बीच तंत्रिकाएँ (Nerves) संदेश वहन करती हैं, तब छोटी-छोटी विद्युत् तरंगे निर्मित होती हैं। इन विद्युत् तरंगों को सूक्ष्मग्राही विद्युद्धारामापी यंत्रों (Galvanometer) से मापा गया और आधुनिक परिवर्धनकारी यंत्रों से इन का लक्ष-लक्ष गुना परिवर्धन किया गया। मानव या जीवित प्राणियों के तंत्रिका तंतुओं (Nerve fibres) में प्रवाहित होने वाली इन तरंगों का अध्ययन करने का कोई संतोषजनक तरीका इनकी अत्यंत तीव्र गति के कारण अब तक ढूँढ़ा नहीं जा सका था।

डा. के. एस. कोल और डा. एच. जे. कर्टिस ने यह जानकारी दी कि उन्होंने इस बात को खोज निकाला है कि साधारणतया घरों में मछली-पात्र में डाला जाने वाला जो मीठे पानी में जीने वाला पौधा होता है, जिसे निटेला कहते है और जिसमें एक ही लम्बी कोशिका होती है, उसकी कोशिका में और तंत्री-तंतु की कोशिकाओं में पूर्ण समानता है, कोई भी भिन्नता नहीं है। इसके अतिरिक्त उन्होंने यह भी पाया कि निटेला पौधे के तंतुओं को उत्तेजित किये जाने पर वे विद्युत् तरंगें निर्माण करते हैं जो, केवल गति को छोड़कर, अन्य सब दृष्टियों से प्राणी और मानव के तंत्री-तंतुओं में निर्माण होने वाली विद्युत् तरंगों के समान ही होती हैं।

इस पौधे के तंतुओं की विद्युत् तरंगे प्राणिय विद्युत् तरंगों से कहीं धीमे चलती देखी गयीं। इसलिये तंत्रिकाओं में प्रवाहित होने वाली विद्युत तरंगों के प्रवाह के मन्दगति चलचित्र (Slow motion pictures) लेने के लिये कोलम्बिया युनिवर्सिटी के अनुसंधानकर्ताओं ने इस आविष्कार को तुरन्त उपयोग में लाया।

संदर्भ-योगी कथामृत, परमहंस योगानंद

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

योग के बारे में

उसके अंदर और उन द्रव्यों में कुछ प्राथमिक और गौण गुण, कुछ सामान्य और विशिष्ट गुण होते हैं, जो परिणामस्वरूप कुछ अपरिवर्तनशील वृत्तियों और निश्चित प्रक्रियाओं से काम करते हैं, जिन्हें हम मानव रूप में प्राकृतिक विधान कहते हैं। यह प्रकृति है। जब सूक्ष्मता के साथ विश्लेषण किया जाय तो मालूम होता है कि यह दो सत्ताओं-**शक्ति** और **भौतिक द्रव्य** का खेल है। लेकिन अगर विश्व के बारे में अद्वैतवादी दृष्टि ठीक है तो किसी दिन यह प्रमाणित हो जायेगा कि ये दोनों एक ही सत्ता हैं, या तो केवल जड़ द्रव्य या केवल शक्ति।

अगर हम विश्व के बारे में इस आधुनिक दृष्टि को मान लें तो भी यह भविष्यवाणी करने में कोई खतरा नहीं है कि यह दृष्टि एक शताब्दी में एक ज्यादा बड़े **समन्वय** में लुप्त हो जायेगी। इसके बाद भी प्रकृति में बुद्धि की उपस्थिति और अनुपस्थिति के बारे में कुछ कहना बाकी रहता है। क्योंकि आखिर बुद्धि किस चीज से बनी है, उसके घटक, गुण और विधान क्या हैं? अपनी परिस्थितियों में मानव बुद्धि क्या है? यही बुद्धि का एकमात्र प्रकार है जिसका हम भीतर से अध्ययन कर सकते और इस कारण उसे समझ सकते हैं। उसकी तीन प्रक्रियाएँ या गुण स्पष्ट हैं-किसी लक्ष्य के प्रति अनुकूलन की शक्ति और प्रक्रिया, उसकी इन्द्रियों पर संघातों के बीच विवेक की प्रक्रिया और शक्ति, मानसिक रूप से सचेतन बोध की प्रक्रिया और शक्ति।

संक्षेप में कहें तो मानव बुद्धि प्रयोजन मूलक, विवेकमय और मानसिक रूप से सचेतन है। मनुष्येतर सत्ताओं के बारे में, पशुओं, वृक्षों, धातुओं या शक्तियों के बारे में हम भीतर से कुछ नहीं कह सकते। हम केवल बाहरी अवलोकन द्वारा इकट्ठे किये गये प्रमाणों के आधार पर यह अनुमान लगा सकते हैं कि उनमें चेतना के ये तत्त्व हैं या नहीं।

भीतरी साक्ष्य न होने के कारण हम निश्चित रूप से नहीं कह सकते कि वृक्ष जड़ तत्त्व में बंद मन नहीं है, जो अपने साधनों द्वारा अपने-आपको व्यक्त करने में असमर्थ है। हम यह नहीं कह सकते कि वह दुःख-सुख की प्रतिक्रियाएँ नहीं सहता। बाहरी प्रमाणों से हम इसके विपरीत अनुमान लगाते हैं। हमारा नकारात्मक निष्कर्ष संभाव्य है, निश्चित नहीं। ज्ञान के भावी अभियान में शायद इसे भी नकारा जाय। फिर भी जो प्रमाण हमें प्राप्त हैं, उनके आधार पर हम बुद्धिमान् और बुद्धिशून्य प्रकृति की तुलना करते हुए वस्तुतः कौन से तथ्यों तक जा पहुँचते हैं?

मनुष्य की अपेक्षा प्रकृति में प्रयोजनात्मक क्षमता और प्रक्रिया बहुत अधिक मात्रा में है। अपने सामने कोई लक्ष्य रखना और उसे प्राप्त करने के लिये जोड़ना, अनुकूल बनाना, हेर-फेर करना, एक करना, साधनों और प्रक्रियाओं को बदलना, कठिनाइयों के विरुद्ध संघर्ष करना और उन पर विजय पाना, जब कठिनाइयों को जीता नहीं जा सकता तो उन्हें मात देने की तरकीब निकालना, यह मानव बुद्धि के सबसे उदात्त और दिव्य भागों में से एक है। परन्तु मनुष्य में उसकी क्रिया प्रकृति तो वैश्व क्रिया की एक विशिष्टता मात्र है। वह मनुष्य में अंशतः तर्कबुद्धि द्वारा पशुओं में बहुत थोड़ी सी प्रारंभिक बुद्धि, मुख्यतः सहजवृत्ति, स्मृति, आवेग और संवेदन द्वारा, वनस्पतियों तथा अन्य वस्तुओं में बहुत कम प्रारंभिक बुद्धि, विशेष रूप से आवेग और यांत्रिक अथवा जिसे हम अनैच्छिक क्रिया कहते हैं उनके द्वारा क्रिया करती है।

परन्तु आद्योपान्त लक्ष्य और लक्ष्य के लिये अनुकूलन वही रहता है और वही के वही आधारभूत साधन काम में आते हैं। क्योंकि मनुष्य में भी सिर्फ अपने गिने-चुने लक्ष्य और प्रक्रिया के लिये तर्कबुद्धि का उपयोग किया जाता है। अधिकांश में वह पाशविक साधनों जैसे स्मरण शक्ति, आवेग, संवेदन, सहजवृत्ति का उपयोग करती है। यहाँ सहजवृत्तियाँ पशु की वृत्तियों की अपेक्षा कम निर्णायक और अधिक सामान्य फिर भी लक्ष्य और प्रयोजन के लिये समान रूप से निश्चित होती हैं।

एक और भाग के लिये वह केवल उसी यांत्रिक आवेग और अनैच्छिक क्रियाओं का उपयोग करती है जिनका उपयोग सत्ता में गलती से निर्जीव कहे जाने वाले रूपों में होता है। हम यह नहीं कह सकते कि प्रकृति का अपव्यय, उसका द्रव्यों को लुटाना, उसकी प्राणिक असफलताएँ, उसकी बाहरी सनकें और उछल-कूद उसकी प्रयोजनहीनता या बुद्धि के अभाव के चिह्न हैं।

❖❖❖

संदर्भ-श्री अरविन्द, 'मानव से अतिमानव की ओर' पुस्तक से... क्रमशः अगले अंक में...

Beginning of my Spiritual Life

-Gurudev Shri Ramlal ji Siyag

Fortunately, in the month of March or April of the year 1983, I got the good fortune of meeting a great saint and an empowered spiritual master Baba Shri Gangainath ji Yogi. This in a way gave birth to a new consciousness to life and it became more blissful. But in my life the happy times have been very short.

June -July of 1983, I had to face severe mental depression. There were many indications prompting me constantly to go to Jamsar but unfortunately, I was not able to understand them. This way without any reason from 23 Aug'1983 I just stopped going for my job, sat at home without any reason but still was not able to go to meet Gurudev (Spiritual master).

Unfortunately, on the dark night of 31st Dec'1983, Babaji physically left the world. Met Baba Ramnathji, resident of Sujandesar, at Bikaner station, while he was on his way to Jamsar for organizing the first 'Bhanadara' (public feast). After hearing from him, the news of Baba's leaving the world, I was stunned (felt the ground slipping from under my feet). Baba Ramnathji requested several times to come for the 'bhandara' but declining his request with a heavy heart, I went to Ganagashahar. The support of my physical father was

snatched from me at the tender age of three and the Spiritual father also left me in a few days, leaving me under the care of God. This way just like in my physical life, I was forced to go through immense struggle in spiritual life too.

The physical life's relation was limited to only earning the livelihood but in that too I had to go through extreme difficulties. Never ever knew what happiness was like.

The field of spiritual life encompasses the entire world. Just like in the physical world, here also will have to struggle with opposite forces, was very clear.I was thrown into the filed of world, all alone, to struggle with the opposite and extremely difficult situations in life with only the support of God. Like Arjun, all the paths have been obstructed, only one path has been left open.

I feel very disappointed when I see that I have been left all alone to fight with demonic tendencies of the world. But when I look back on my past, I derive some strength from the fact that despite being all alone, defeating the opposite and extremely difficult situations in my life, I have reached till here.

To be cont...

www.the-comforter.org

सिद्धयोग :- शक्तिपात दीक्षा द्वारा कुण्डलिनी जागरण

भारतीय ऋषियों ने सृष्टि की उत्पत्ति के संबंध में अंतर्मुखी होकर खोज की तो पाया कि संपूर्ण ब्रह्माण्ड, मनुष्य के शरीर में है। जब हमारे ऋषियों ने और गहन शोध किया तो पाया कि इस जगत् को रचने वाला **सहस्रार** में स्थित है और उसकी **शक्ति मूलाधार** में। इन दोनों के कारण ही संसार की रचना हुई है। उस परम पुरुष की शक्ति, उसके आदेश से नीचे उतरती गई और अलग-अलग बंध लगाकर सभी लोकों की रचना करके मूलाधार में स्थित हो गई। इसके **चेतन** होकर **उर्ध्वगमन** करते हुए सहस्रार में पहुँचने का नाम ही **'मोक्ष'** है। मोक्ष की प्राप्ति जीते जी होती है। मरने के बाद मोक्ष की कल्पना करना, एक **मृगमरीचिका** ही है और कुछ नहीं।

गुरु-शिष्य परंपरा में जो शक्तिपात दीक्षा का विधान है, उसके अनुसार गुरु अपनी शक्ति से कुण्डलिनी को चेतन करके ऊपर को चलाते हैं। गुरु का शक्ति पर पूर्ण **प्रभुत्व** होता है, इसलिए वह उस गुरु के आदेश के अनुसार चलती है। क्योंकि यह सहस्रार में स्थित **परमसत्ता** की **पराशक्ति** है। अतः यह मात्र उसी का ही आदेश मानती है। इसका स्पष्ट अर्थ है कि जिस व्यक्ति को सहस्रार में स्थित **उस परम तत्त्व** की सिद्धि हो जाती है, वही इसका संचालन करने का अधिकारी है। यह शक्ति विश्व में, **एक समय** में, मात्र **एक ही व्यक्ति** के माध्यम से कार्य करती है। क्योंकि यह **सार्वभौम सत्ता** है, इसलिए वह व्यक्ति विश्वभर में अभूतपूर्व क्रांतिकारी परिवर्तन करने की सामर्थ्य रखता है।

यह भारतीय दर्शन की विश्व को **अभूतपूर्व** एवं **अद्वितीय** देन है। अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के संस्थापक व संरक्षक, प्रवृत्तिमार्गी परम श्रद्धेय समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग अपने सद्गुरुदेव बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी ब्रह्मलीन (जामसर) के आदेशानुसार इस **दिव्य ज्ञान** का **महाप्रसाद** बाँटने, विश्व में **अकेले** ही निकल पड़े हैं।

शक्तिपात से जब कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत हो जाती है तो **उर्ध्वगमन** करने लगती है। कई जन्मों के संस्कारों के कारण रास्ता अवरूद्ध रहता है। अतः साधक को विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाएँ जैसेः- आसन, बंध, मुद्राएँ एवं प्राणायाम स्वतः ही होने लगते हैं। वह शक्ति साधक का शरीर, प्राण, मन और बुद्धि अपने अधीन कर लेती है। इस प्रकार जो क्रियाएँ होती हैं उन्हें साधक न तो करने की स्थिति में होता है और न ही रोकने की। वह शक्ति सीधा अपने नियंत्रण में सभी क्रियाएँ स्वयं करवाती है।

गुरुदेव के अनुसार भौतिक विज्ञान के शोधकर्त्ताओं की असंख्य समस्याओं का समाधान, इस ज्ञान से हो जाएगा। समाधि स्थिति में वह परमसत्ता हर समस्या का समाधान शोधकर्ताओं को करवा देगी। इस प्रकार मनुष्य जाति की असंख्य समस्याओं का समाधान हो जाएगा।

गुरु-शिष्य परंपरा में जिस सिद्धयोग अर्थात् महायोग का वर्णन है, उसके आदि गुरु कैलाशवासी भगवान् पर शिव हैं। शिव से यह ज्ञान अमर कथा द्वारा महायोगी **श्री मत्स्येन्द्र नाथ** जी को मिला। उनके परम शिष्य महायोगी श्री गोरखनाथजी ने इस सिद्धयोग से संसार का जो कल्याण किया है, वह सर्वविदित है। यह योग संसार के त्रिविध तापों- **आधिदैहिक, आधिभौतिक व आधिदैविक** (Physical, Mental & Spiritual) का शमन (**नाश**) करता है। इसलिए संसार की कोई भी असाध्य बीमारी व विज्ञान सम्बधित समस्या नहीं है; जिसका सिद्धयोग में समाधान न हो। **अर्थात् सिद्धयोग में सब कुछ संभव है, जो सदगुरुदेव श्री रामलालजी सियाग की शक्तिपात दीक्षा से मानवता में मूर्तरूप ले रहा है।**

सिद्धयोग से लाभ

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग से मंत्र दीक्षा प्राप्त करने के बाद, उनके चित्र का नियमित ध्यान एवं नाम जप द्वारा मातृशक्ति कुण्डलिनी के जागरण से साधक में निम्न परिवर्तन आ जाते हैं-

- सभी प्रकार के असाध्य रोगों जैसेः-एड्स, कैंसर, डायबिटीज, टी.बी, दमा, ब्लड प्रेशर, मिर्गी, बवासीर, हीमोफीलिया, हेपेटाइटिस व गठिया आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।
- सभी प्रकार के मानसिक रोगों जैसेः-तनाव, पागलपन, उन्माद, फोबिया (भय), चिंता, अनिद्रा आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।
- सभी प्रकार के नशों जैसेः- शराब, अफीम, हेरोइन, भांग, तम्बाकू (बीड़ी, सिगरेट व जर्दा) आदि से बिना किसी परेशानी के छुटकारा।
- विद्यार्थियों की **एकाग्रता** एवं **याददाश्त** में नाम जप व ध्यान द्वारा अभूतपूर्व वृद्धि।
- आध्यात्मिकता के पूर्ण ज्ञान के साथ भूत, वर्तमान एवं भविष्य की घटनाओं को ध्यान के समय प्रत्यक्ष देखना और सुनना।
- गृहस्थ जीवन में रहते हुए **'भोग एवं मोक्ष'** दोनों तत्त्वों की सहज प्राप्ति। इसके साथ ही जीवन की समस्त सांसारिक परेशानियों से छुटकारा।
- ईश्वर की प्रत्यक्षानुभूति एवं साक्षात्कार संभव।

ही अनुसार उसका उपयोग कर रही हैं। यही कारण है कि भौतिक विज्ञान, प्राणियों के संहार के लिए काम में लिया जा रहा है। अगर संसार की राज सत्ता पर सात्विक शक्तियों का प्रभाव हो जाय तो स्थिति बिलकुल विपरीत हो जाएगी।

इस समय तो बन्दर के हाथ में उस्तरा आने वाली स्थिति है। तामसिक शक्तियों ने भौतिक और आध्यात्मिक जगत् के लोगों के बीच में ऐसी झूठी काल्पनिक लक्ष्मण रेखा खींच दी है कि एक दूसरे के क्षेत्र दो भागों में बाँट दिये।

संन्यासी लोग कहते हैं कि राजसत्ता को उनके क्षेत्र में बिल्कुल हस्तक्षेप करने का अधिकार नहीं। दूसरी तरफ राजसत्ता के लोग खुला आरोप लगा रहे हैं कि धर्मगुरु राजसत्ता को प्रभावित करने के लिए, धर्म का दुरूपयोग कर रहे हैं। इस प्रकार इन तामसिक शक्तियों ने दोनों वर्गों को अपने प्रभाव में लेकर, इतना भयंकर संघर्ष प्रारम्भ करवा दिया है कि किसी को समझने का अवसर ही नहीं देती है। तामसिक शक्तियों ने इस प्रकार संसार के जीवों को कष्ट देने में कोई कसर नहीं छोड़ी है।

सारे संसार में जो ताण्डव नृत्य तामसिक शक्तियाँ करने लगी हैं, उसको देखने से ऐसा लगता है कि अब इनका अन्त बहुत निकट आ चुका है। हर कार्य की अति उसकी आखिरी सीमा होती है। श्री अरविन्द ने कहा है जब तक संसार की भौतिक सत्ता पर आध्यात्मिक सत्ता का शासन नहीं होगा, शान्ति असम्भव है। इस समय संसार के तथाकथित धर्माचार्यों और संतों ने तामसिक **शक्तियों** के प्रभाव के कारण पलायन वादी रुख अपना रखा है, वह बिल्कुल गलत है। संत और धर्म गुरु मानव मात्र का दुःख दूर करने के लिए भेजे जाते हैं। संसार से दूर भागने का अर्थ है वह तामसिक **शक्तियों** से या तो भयभीत हैं या इतने उनके अधीन हो चुके कि उनका हर आदेश मान कर वे ऐसा कर रहे हैं।

सतयुग में हर प्राणी मात्र का सीधा सम्पर्क उस परमसत्ता से होता था, ऐसी स्थिति में सभी संत थे। युग के परिवर्तन के साथ-साथ ज्यों-ज्यों जीव उस परमसत्ता से दूर हटता गया, संतों ने प्रकट होकर लोगों का पथ प्रदर्शन किया, त्रेता और द्वापर में हमें ऐसे असंख्य उदाहरण मिलते हैं। परन्तु धीरे-धीरे तामसिकता का शिकंजा मजबूत होता चला गया और आज ऐसा समय आ गया है कि एक मात्र उन्हीं **शक्तियों** का साम्राज्य है।

तामसिकता की अति हो चुकी है। यही कारण है कि इनका अन्त होने वाला है। संसार के कई आध्यात्मिक संत ऐसी भविष्यवाणियाँ कर चुके हैं। पिछले कुछ समय से तो हमारे देश के सत्ता पक्ष के लोगों ने भी ऐसी बातें करनी प्रारम्भ कर दी हैं, जिसे सुनकर अचम्भा होता है। 21 वीं सदी के भारत की तस्वीर जब सत्ता पक्ष दिखाता है तो तामसिक लोग इसका मजाक उड़ाते हैं।

मुझे यह देखकर अचम्भा हो रहा है कि इस परमसत्ता ने कैसे सत्ता पक्ष से सच्चाई उगलवानी प्रारम्भ कर दी है। यह कटुसत्य है कि उस शक्ति का सूर्य उदय होने ही वाला है। सूर्योदय का आभास काफी पहले होने लगता है। मनुष्य ही नहीं प्राणिमात्र के अन्दर से आलस्य समाप्त होकर, एक नई चेतना का संचार होने लगता है और सूर्योदय के साथ ही सभी प्राणी सृजन में जुट जाते हैं। समय की दूरी केवल भौतिक जगत् को प्रभावित करती है।

अध्यात्म जगत् में वह पूर्ण रूप से समाप्त हो जाती है। इतने लम्बे समय में भौतिक जगत् में जो उन्नति हुई, अध्यात्म सत्ता को उसे अपने अधीन करने में कुछ भी समय नहीं लगेगा, जिसे संत बहुत पहले देख चुके थे। **श्री अरविन्द ने इसी कारण 24-11-1926 को भगवान् श्री कृष्ण के अवतरण की स्पष्ट घोषणा कर दी। अपने क्रमिक विकास के साथ शीघ्र ही वह परम सत्ता संसार में अपना प्रकाश फैलाने वाली ही है।''**

गुरुदेव सियाग सिद्धयोग का प्रकाश पूरे विश्व में अबाध गति से फैल रहा है। गुरुदेव द्वारा बताई गई विधि के अनुसार साधक अपनी आराधना करते रहें, यही जीवन का सर्वोत्तम उद्देश्य है।

-संपादक

''ये महामानव (श्री रामकृष्णदेव परमहंस) असामान्य नहीं थे; वे तुम्हारे और हमारे समान ही मनुष्य थे। पर वे महान् योगी थे। उन्होंने यह ब्राह्मी स्थिति प्राप्त कर ली थी; हम और तुम भी इसे प्राप्त कर सकते हैं। वे कोई विशेष व्यक्ति नहीं थे। एक मनुष्य का उस स्थिति में पहुँचना ही इस बात का प्रमाण है कि उसकी प्राप्ति प्रत्येक मनुष्य के लिए संभव है। संभव ही नहीं, बल्कि प्रत्येक मनुष्य, अंत में उस स्थिति को प्राप्त करेगा ही और यही है-धर्म।''

-स्वामी विवेकानन्द

क्या एक निर्जीव चित्र, सजीव (मानव) पर प्रभाव डाल सकता है?

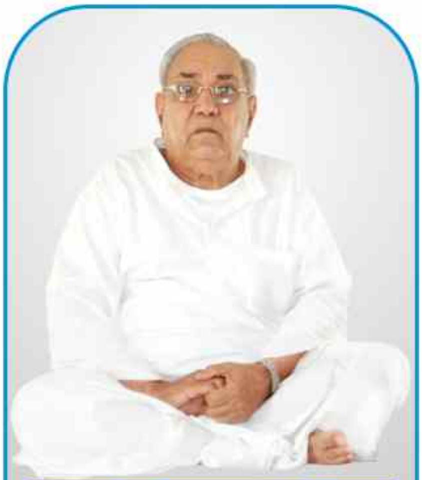

सद्‌गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या?

ध्यान करके देखें।

ध्यान की विधि

गुरूदेव सियाग सिद्धयोग आराधना की एक सरल विधि है। इसमें दो कार्य करने होते हैं। सघन नाम (मंत्र) जप व नियमित ध्यान।

आरामदायक स्थिति में बैठकर थोड़ी देर के लिए गुरुदेव के चित्र को एकाग्रता से खुली आँखों से देखें। फिर आँखें बंद करके समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के चित्र को अपने आज्ञाचक्र पर (जहाँ बिन्दी या तिलक लगाते हैं।) केन्द्रित कर, गुरुदेव से 15 मिनट के लिए ध्यान स्थिर करने की करुण प्रार्थना करें। अब गुरुदेव द्वारा दिये गए संजीवनी मंत्र का मानसिक रुप से सघन जाप करें। (बिना होंठ-जीभ हिलाए)। नाम जप ही ध्यान की चाबी (Key) है। इसको तेल की धार की तरह, हर समय (Round the Clock) सघन मंत्र जप करें।

इस दौरान कोई भी यौगिक क्रिया (आसन, बंध, मुद्रा या प्राणायाम) हो तो घबराएँ नहीं तथा न ही इन्हें रोकने का प्रयास करें। ये क्रियाएँ शारीरिक विकारों को ठीक करने के लिए होती हैं। ध्यान अवधि पूर्ण होते ही सामान्य स्थिति हो जाएगी। इस विधि से सुबह-शाम खाली पेट नियमित रुप से (केवल 15 मिनट) ध्यान करते रहें।

Method of Meditation

*Gurudev Siyag Siddha Yoga is an easy to do Spiritual Practise. It includes two things to be done by any seeker **'Mantra'** chanting and **'Meditation'**.*

Sit in a comfortable position. See gurudev's image for a while and now close your eyes and try to see Gurudev's image at the centre of your forehead and pray Gurudev for meditation of self for 15 minutes time.

Now mentally chant (without moving your **lips** and **tounge**) Sanjeewani Mantra given by Gurudev. Mantra Chanting is key for Meditation.

Yoga and meditation do not result without **Sanjeewani Mantra**

Chant it round the clock like endless chain of cycle.

During this time if you undergo automatic yogic exercises, then let it happen, don't try to stop them.

After requested time is over, they will stop and you will come in normal position.

Meditation in this way 15 minutes in the morning and evening with empty stomach.

For profound meditation, chant the mantra as much as you can while performing household tasks

www.the-comforter.org

शक्तिपात–दीक्षा

शक्तिपात दीक्षा एक महान् और दिव्य विज्ञान है जिसके द्वारा सिद्धगुरु अपनी दिव्य शक्ति को शिष्य में सीधे संप्रेषित कर, उसकी सुषुप्त शक्ति कुण्डलिनी को जाग्रत करते हैं।

गुरु शिष्य परम्परा में चार प्रकार से शक्तिपात दीक्षा का विधान है। स्पर्श द्वारा, दृष्टि द्वारा, संकल्प व शब्द (मंत्र) दीक्षा द्वारा।

- गुरुदेव का मंत्र चेतन (**Enlightened**) मंत्र है, इसमें प्राण प्रतिष्ठा की हुई है। इस मंत्र में असंख्य ऋषियों की कमाई है।
- नाम जप ही चाबी (**Key**) है। इसको तेल की धार की तरह, हर समय (**Round the Clock**) सघन जपो।

गुरुदेव की दिव्य आवाज में संजीवनी मंत्र सुनने के लिए डायल करें–07533006009

सभी जाति–धर्मों के जिज्ञासु स्त्री–पुरुषों को स्नेह निमंत्रण।

मुख्यालय : **अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र**

होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.) 342 003 सम्पर्क : 0291–2753699, 9784742595

E-mail : avsk@the-comforter.com | Web : www.the-comforter.org

दसवें अवतार 'कल्कि' का अवतरण

"The sword of 'Kalki' alone can purify and sanctify the demonic tendencies of the entire earth."

'' कल्कि की एक मात्र तलवार सम्पूर्ण पृथ्वी की आसुरिक प्रवृत्ति को शुद्ध और पवित्र कर सकती है।''

www.the-comforter.org

– महर्षि श्री अरविन्द

यदा-यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।(गीता 4-7)

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे-युगे।।(गीता 4-8)

''24 नवम्बर, 1926 को श्री कृष्ण का पृथ्वी पर अवतरण हुआ था। श्री कृष्ण अतिमानसिक प्रकाश नहीं है। श्री कृष्ण के अवतरण का अर्थ है अधिमानसिक देव का अवतरण जो जगत् को अतिमानस और आनंद के लिए तैयार करता है। श्री कृष्ण आनंदमय हैं। वे अतिमानस को अपने आनंद की ओर उद्‌बुद्ध (Inspire) करके विकास का समर्थन और संचालन करते हैं।'' –महर्षि श्री अरविन्द

पूज्य सद्‌गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग का सम्पूर्ण जीवन दर्शन महर्षि अरविन्द की समस्त भविष्यवाणियों से पूर्णतः सत्य प्रमाणित हो रहा है।

www.the-comforter.org

R.N.I. NO. : RAJMUL/2008/26365 * POSTAL REGD. NO. JODHPUR/269/01.01.2017 & VALID UP TO 31.12.2019
DATE OF ISSUE : EVERY MONTH 27 & DISPATCH 28-29

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

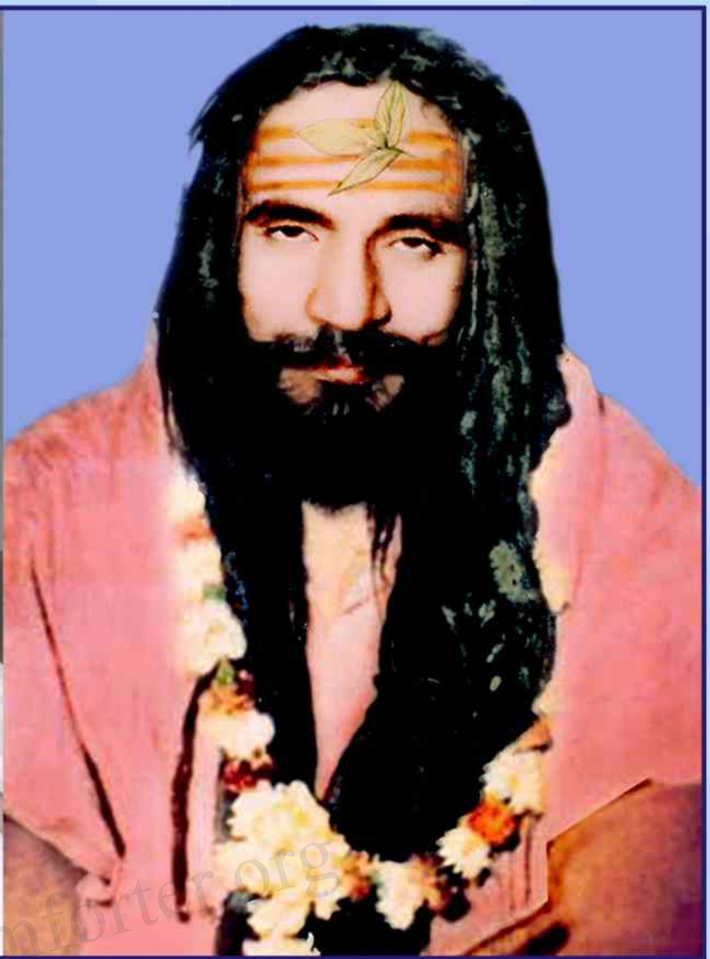

बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी (ब्रह्मलीन)

www.the-comforter.org

यह एक ऐसा विज्ञान है जो आज तक प्रकट नहीं हुआ और **अब मेरी तस्वीर से ध्यान होगा**, आप लोग इस देश में ही नहीं, दुनिया में कहो कि इस व्यक्ति की तस्वीर का ध्यान करने से, एड्स और कैंसर सहित सभी रोग ठीक हो जाएंगे।

अब यह Live (सीधा प्रसारण) जो हो रहा है, यह तो National (राष्ट्रीय) और International (अंतर्राष्ट्रीय) Level (स्तर) पर हो रहा है। मेरी आवाज तो चली गई आकाश में, अब इसको कोई रोक नहीं सकेगा और इसकी *(स्वयं की ओर इशारा करके)* तस्वीर नहीं मरेगी, इसकी तस्वीर नहीं मरेगी।

–समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

(30 जुलाई 2009) जोधपुर आश्रम में विशाल शक्तिपात–दीक्षा कार्यक्रम के दौरान

''समर्थ सद्गुरुदेव का महामिशन, उनकी तस्वीर का ध्यान व उनकी वाणी में दिव्य मंत्र द्वारा, जब तक ये पृथ्वी रहेगी तब तक चलता रहेगा।''

अवितरित प्रति निम्न पते पर लौटायें
Spiritual Science • स्पिरिचुअल साइंस
अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, होटल लेरिया के पास, चौपासनी
पोस्ट बॉक्स नं.41, जोधपुर (राज.) 342003 फोन: 0291-2753699, मो. : 9784742595

मुद्रित सामग्री (Printed Matter)

सेवा में,
श्रीमान् ______________________

स्वत्वाधिकारी : अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के लिए प्रकाशक व मुद्रक राजेन्द्र कुमार चौधरी के लिए ताज प्रिण्टर्स, बोराणा हाऊस, जालोरी गेट के अन्दर, जोधपुर से केवल मुद्रित एवं अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राजस्थान) से प्रकाशित। सम्पादक – रामूराम चौधरी